राग मरुज

कहानियां मरुधर के तालाबों की

बूंद-बूंद को तरसते मरुधरा के लोगों के लिए पानी की हर बूंद अमृत समान है। कुएं, बावड़ी, ताल-तालाब के बिना जीवन संभव नहीं।
लोक मान्यता है कि तालाब बनवाना पुण्य कार्य यानि मानव जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल करना है।
हर तालाब खास माना जाता रहा है, उसके आस पास बसे समुदायों के लिए। ये तालाब साधारण नहीं हैं, सरोवर नाम से प्रतिष्ठित किए जाते रहे हैं। सरोवर ही फिर बोलचाल में सरवर बना। लोकगीतों में इन्हें 'भीम तलाव' या 'समंद तलाव' कह कर सराहा गया है।
पानी को तरसते लोक मानस में ये समुद्र जितने विशाल पाट वाले, भीमकाय जल स्रोत जीवन का आधार हैं।

क्या थार रेगिस्तान में पारंपरिक जल संचयन और संरक्षण तकनीक आज भी प्रासंगिक है?
या जल संरक्षण की यह समृद्ध परंपरा केवल एक इतिहास बनकर रह जाएगी?

उन्नति
UNNATI
desert resource centre

राग मरुज
कहानियां मरुधर के तालाबों की

कुरजाँ ऐ...
म्हारो भँवर मिला दो सा,
कुरजाँ... तू म्हारी भायली
तू हैं धरम की बेन,

संदेसो लेती जाईजे
ऐ उडती कुरजड़ियाँ,
कुरजाँ म्हारी हाले नी
परदेसाँ रे देस,

मरुधरा में जल स्रोतों का कुरजां (साइबेरियन क्रेन) व पनिहारी के साथ सदियों पुराना भावनात्मक लगाव रहा है। जब डाक, तार, फोन जैसी संचार व्यवस्था नहीं थी, अकाल के समय रोजगार के लिए प्रवास पर गए जीवन साथी के आगमन का भावनात्मक संदेश कुरजां के साथ भेजने पर आधारित लोक गीत की यह पंक्तियां थार के जीवन की रोमांचक अभिव्यक्ति है।

थार का सागर नेतसी का बिपरासर तालाब

मांडणा

*पुस्तक में मरुधरा के पारंपरिक मांडणों से लिए गए प्रतीकों का उपयोग किया गया है।
महिलाओं द्वारा उकेरे जाने वाले इन मांडणों में उनके जीवन के उल्लास, अभाव एवं संकट की भावनात्मक अभिव्यक्ति का चित्रण दिखता है। अलग-अलग प्रकार के जल स्रोत मांडणों में चित्रित किए जाते रहे हैं,
जो पानी और पनिहारी के अटूट रिश्ते को दिखाते हैं।*

राग मरुज

कहानियां मरुधर के तालाबों की

बेरंग थार में रंगों की बौछार करता प्रकृति का एकाकार रूप - नेतसी का बिपरासर तालाब

लेखन - सूरज सिंह, दिलीप बीदावत
संकल्पना - अंशुल ओझा, स्वप्नि शाह

कला-सज्जा - तेजस्वी सिंह
छायाचित्र - सनप्रीत सिंह, तेजस्वी सिंह, अंशुल ओझा
लेखन सहयोग - बाबा मायाराम, तोलाराम, श्रवणराम, टीकमराम, हिमताराम
मुद्रण सहयोग - ललित मनराल

प्रकाशक - उन्नति
सह प्रकाशक - डेजर्ट रिसोर्स सेंटर
www.unnati.org, www.ourdeserts.org

प्रथम संस्करण 2022

मुख पृष्ठ फोटो - पनघट पनिहारी परंपरा, कुम्हारकोठा तालाब, जैसलमेर

किताब के विकास एवं मुद्रण में सहयोग के लिए यूरोपियन यूनियन का विशेष आभार

परंपरा से वर्तमान तक जल स्वावलंबन के सफर की साक्षी बिलासर नाडी, सिणधरी

गजेन्द्र सिंह शेखावत
Gajendra Singh Shekhawat

सत्यमेव जयते

जल शक्ति मंत्री
भारत सरकार
Minister for Jal Shakti
Government of India

शुभकामना संदेश

जल सहेली सदस्यों,

पश्चिमी राजस्थान में कम बारिश के बाद भी वर्षा बूंदों को सहेजने की प्रवृति पूर्वजों द्वारा विकसित होने से थार मरुस्थल में सैंकड़ों वर्षों से जीवन सुलभ हुआ है, लेकिन समय के साथ नाडी, तालाब, बेरियों आदि का उपयोग, संरक्षण एवं प्रबंधन कम होने से इनका प्रभाव समुदाय के गरीब परिवारों विशेषकर महिलाओं पर अधिक हुआ है।

वर्षा जल संचयन की प्रभावशीलता का प्रमाण है कि राजस्थान के लोगों ने कभी भी वर्षा की कमी का शोक नहीं बनाया, बल्कि उसका सामना पूरे उत्साह के साथ किया। हमारे पूर्वजों ने हमें एक समृद्ध जल संस्कृति दी है। आप जल सहेलियों ने भी इसी श्रद्धा के फलस्वरूप परंपरागत जल स्रोतों के सरंक्षण में मदद की है। अतः 350 से अधिक गाँवों में आपके द्वारा किया गया यह प्रयास देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है। यही मिशन भारत सरकार का भी है, कि पानी के परम्परागत स्रोतों का संरक्षण एवं प्रबंधन समुदाय और प्रशासन के सहयोग से स्थायी बना रहे, ताकि 'हर घर नल तथा हर घर जल' सुनिश्चित हो पाए।

आज मुझे खुशी है कि पश्चिमी राजस्थान में 15000 से भी ज्यादा घर इन स्रोतों के माध्यम से आत्मनिर्भर बन रहे हैं और दूसरों के लिए एक उदाहरण बन रहे हैं।

इस संदर्भ में उन्नति विकास शिक्षण संगठन द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम 'मरूधर में जल स्वावलंबन' को हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ, जिसके माध्यम से जल स्रोतों के सरंक्षण और प्रबंधन में लोगों को प्रेरित किया गया है।

मैं आशा करता हूँ कि आपके द्वारा किया गया ये प्रयास दूसरे गाँवों को भी पानी के विषय में आत्मनिर्भर होने में मदद करेगा, साथ ही सम्पूर्ण शामलात को मुस्कुराने का अवसर प्राप्त होगा।

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

जल शक्ति अभियान

Office : 210, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001
Tel: No. (011) 23711780, 23714663, 23714200, Fax : (011) 23710804
E-mail : minister-mowr@nic.in

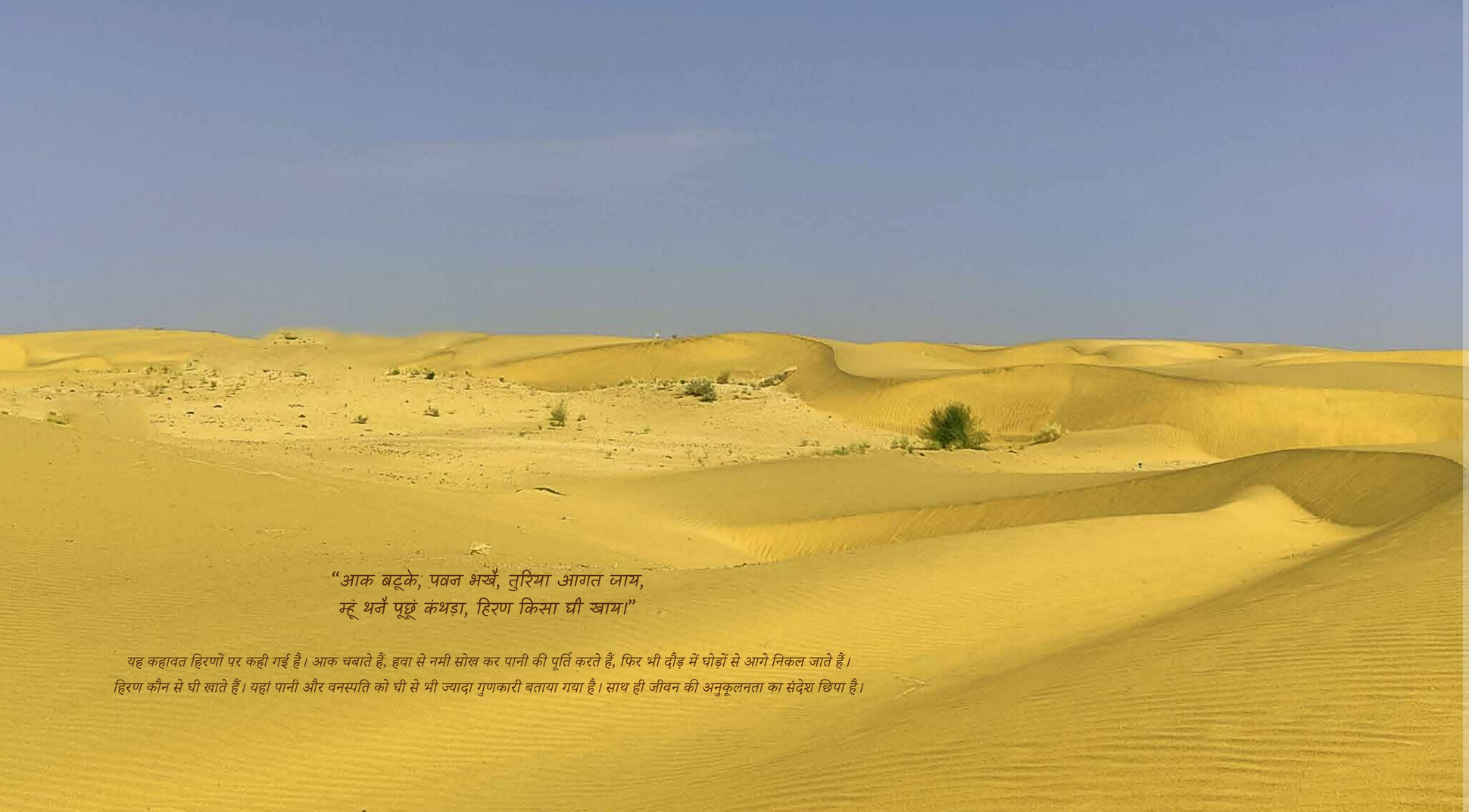

“आक बटूके, पवन भखै, तुरिया आगत जाय,
म्हूं थनै पूछूं कंथड़ा, हिरण किसा घी खाय।”

यह कहावत हिरणों पर कही गई है। आक चबाते हैं, हवा से नमी सोख कर पानी की पूर्ति करते हैं, फिर भी दौड़ में घोड़ों से आगे निकल जाते हैं। हिरण कौन से घी खाते हैं। यहां पानी और वनस्पति को घी से भी ज्यादा गुणकारी बताया गया है। साथ ही जीवन की अनुकूलनता का संदेश छिपा है।

अनुक्रमाणिका

पुस्तक के बारे में / i
प्रस्तावना / iii
राग मरुज / vii

मेघराजसर तालाब / 03
राणेरी तालाब / 07
चाँदासर तालाब / 11
सांगुरी नाडी / 15
बगोलाई नाडी / 19
बिपरासर तालाब / 23
जीयादेसर तालाब / 27
कुम्हारकोठा नाडा / 31
साँवराई तालाब / 35
बिजलिया तालाब / 39
राम तलाई / 43
गाला नाडी / 47
डाबड़ नाडी / 49
बिलासर नाडी / 53
सिरलाई नाडी / 57
इकड़ाणी तालाब / 61
चिला नाडी / 65
सांगरा नाडी / 69
गाँवई नाडी / 73
भँवरला नाडा / 77
शिवसागर तालाब / 81
सुंडसागर तालाब / 85
राम सरोवर / 87
गुसाई धाम सरोवर / 91
ब्राह्माणी माता तालाब / 93
रोल तालाब / 97
मोरप्पा नाडी / 101
गोटण नाडी / 105

पुस्तक के बारे में

अनूठी प्रबंधन व्यवस्था के कारण पांच सौ सालों से जलापूर्ति करता है इकडाणी का तालाब

शीर्षक के अनुरूप, इस पुस्तक में मरुधरा के 28 तालाबों की कहानियां हैं, जिनके निर्माण एवं प्रबंधन का समृद्ध इतिहास है। साथ ही, यह उन समुदायों के जीवंत अनुभवों की गाथा भी है जिन्होंने पिछले तीन दशकों में पानी के बदले परिदृश्य के बावजूद मरुधरा के पारंपरिक जल संग्रहण एवं प्रबंधन के ज्ञान को प्रज्ज्वलित रखा है। इस पुस्तक में वर्णित सभी तालाबों की उपयोगिता बनी हुई है, तथा समुदाय उनका रखरखाव व प्रबंधन कर रहा है। सुरक्षा, संरक्षण, विकास एवं प्रबंधन के अटूट पारंपरिक नियमों के साथ नई चुनौतियों एवं संघर्षों से प्रेरित नए मानदंड शामिल किए गए हैं। यह कहानियां उदाहरण हैं जो प्रेरणा देने के साथ, आज के परिदृश्य में समुदायों के संघर्षों एवं उनके सामने आ रही चुनौतियों को भी उजागर करती हैं।

लंबी और सहभागी प्रक्रिया से यह दस्तावेज अस्तित्व में आया है। समुदाय द्वारा तालाबों की प्रबंधन व्यवस्था को समझने के लिए उन्नति द्वारा स्वैच्छिक संगठनों के सहयोग से की गई छः जिलों में शामलात शोध यात्रा के दौरान बेहतर प्रबंधन वाले तालाबों की पहचान हुई। यह समझ बनी कि पारंपरिक जल स्रोतों को उपयोगी बनाए रखने में समुदाय की मजबूत प्रबंधन व्यवस्था महत्वपूर्ण है। ऐसे तालाबों को प्रेरणा स्रोत के रूप में समाज के सामने लाना चाहिए। शोध यात्रा में पहचाने गए जल स्रोतों के अतिरिक्त जल, जंगल, जमीन के मुद्दों को लेकर पश्चिमी राजस्थान में कार्यरत स्वैच्छिक संगठनों से भी बेहतर प्रबंधन वाले तालाबों के नामकरण प्रस्ताव आमंत्रित किए गए। साझा प्रयासों से 28 तालाबों के दस्तावेजीकरण का कार्य सिरे चढ़ा।

इस दस्तावेज को सबके समक्ष रख पाए, इसका श्रेय गाँव के समुदायों को जाता है, जिन्होंने अपनी बात निःसंकोच साझा की। साथ ही दस्तावेजीकरण के कार्य में सूरज सिंह, तेजस्वी सिंह, सनप्रीत सिंह, स्वतंत्र पत्रकार बाबा मायाराम, राजेन्द्र स्वामी, उन्नति के दिलीप बीदावत जी ने गाँव-गाँव जाकर लोगों से चर्चा की, साक्षात्कार व छाया चित्रों को संकलित करने का कार्य किया तथा कहानियां लिखीं।

इस कार्य में डेजर्ट रिसोर्स सेंटर, उरमूल खेजड़ी संस्थान, नागौर, सारा संस्था, सीकर एवं सृजन, पाली का सराहनीय सहयोग रहा। सूत्रधार के रूप में श्री चतर सिंह जाम, श्री धन्नाराम नायक, श्री तोलाराम चौहान, श्री हिमताराम मेहरा, श्री टीकमराम व श्री मोटाराम जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

श्री वी. के. माधवन, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, वाटरएड इंडिया व श्रीमती सुशीला ओझा, अध्यक्ष, उरमूल सीमांत ने सारगर्भित प्रस्तावना लेखन में सहयोग किया।

यह प्रकाशन यूरोपियन संघ के वित्तीय सहयोग से संभव हुआ है तथा मरुधरा में जल स्वावलंबन में समुदाय की कोशिश आधारभूत प्रेरणा के रूप में काम आएगा।

इसी आशा और विश्वास के साथ सभी सम्माननीय सहयोगकर्ताओं का आभार, धन्यवाद।

स्वप्निल शाह
उन्नति

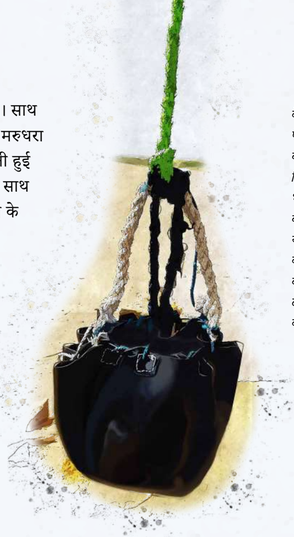

बेरी या बेरे से पानी निकालने का उपकरण जिसे स्थानीय भाषा में चड़स कहते हैं। पहले यह चमड़े से बनता था, अब वाहन के पुराने ट्यूब से भी बनाए जाते हैं।

रेगिस्तान की बेरी-सतही और पाताली के बीच का रेजवाणी रिसाव वाले पानी का भरोसेमंद संसाधन

बादलों से बतियाता कुम्हारकोठा तालाब - मरुधरा में पानी के लिए लोगों ने बादलों में समुद्र ढूंढ लिया और जमीन पर उतार लिया

प्रस्तावना

पिछले तीन दशकों में इंदिरा गाँधी नहर और नलकूपों के प्रसार ने पश्चिमी राजस्थान के परिदृश्य और पानी की स्थिति दोनों को बदल दिया है। जिन क्षेत्रों में सदियों से लोगों ने पानी की कमी का सामना किया है और जल संरक्षण की अपनी समृद्ध परंपराओं को पाया है, वहां अब अन्य स्रोतों से पानी तक समुदाय की पहुंच बनी है।

क्या थार रेगिस्तान में पारंपरिक जल संचयन और संरक्षण तकनीक आज भी प्रासंगिक है? या जल संरक्षण की यह समृद्ध परंपरा केवल एक इतिहास बनकर रह जाएगी? यह किताब बाड़मेर, जैसलमेर, जालौर, जोधपुर और नागौर के रेगिस्तानी जिलों के 28 पारंपरिक जल स्रोतों पर निर्भर समुदायों के जीवंत अनुभवों का दस्तावेजीकरण है, जो न सिर्फ जल संरक्षण के इतिहास का अनुभव कराता है अपितु वर्तमान में इन जल स्रोतों के अस्तित्व के लिए चल रहे संघर्ष, जब राज्य ने लंबे समय से पानी के प्राथमिक सेवा प्रदाता की भूमिका निभाई है और अनिश्चितताओं से निपटने के लिए सामूहिक पहल की चुनौतियां हैं, दोनों की याद दिलाता है। यह पुस्तक इन तालाबों के इतिहास और सामुदायिक प्रबंधन के पूर्व व वर्तमान तरीकों का उल्लेख करने के साथ- साथ उन्नति के सहयोगात्मक पहल के माध्यम से इन जल स्रोतों के पुनरुद्धार और सुव्यवस्थित प्रबंधन का वर्णन करती है।

यह किताब इन जल स्रोतों- तालाबों और नाडियों का इतिहास, सामुदायिक प्रबंधन तंत्र, अतीत में समुदायों के सामने आई चुनौतियों और आज जो वर्तमान चुनौतियाँ हैं उनके साथ-साथ इन जल स्रोतों के पुनरुद्धार और निरंतर प्रबंधन के लिए उन्नति की सहजकर्ता के रुप में एक सहभागी पहल के माध्यम से हाल के प्रयासों के विवरणों से भरपूर है।

इन तालाबों के इतिहास का पता लगाने में कई जातियों, धर्मों और लिंग के व्यक्तियों का नेतृत्व सामने आता है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि 'ओड' और 'पालीवाल', 'बंजारा' - ऐसे समुदाय जो रेगिस्तान में पानी से बेहद करीब से जुड़े हुए हैं - इन कहानियों में भी उनको शामिल किया गया है।

परिवारों और उनके जल स्रोतों के बीच संबंध सांस्कृतिक परंपराओं में जन्म से लेकर 'मोक्ष' तक और बीच में मानव अस्तित्व के सभी महत्वपूर्ण प्रसंगों में प्रतिबिंबित होता है। इन जल स्रोतों के संरक्षण के लिए आवश्यक सामूहिक कार्यों के लिए पारंपरिक त्योहार, चन्द्र पंचांग एवं ऋतु आदि सभी सूचक हैं।

नेतसी गाँव में बिपरासर तालाब और हेमा गाँव (जैसलमेर) में जियादेसर तालाब की कहानियां सामूहिक कार्यों के उल्लेखनीय उदाहरण हैं। इन तालाबों की कहानियां सामूहिक कार्यों, अन्य गाँवों द्वारा प्रदान की जा रही वाटरशेड सेवाओं की मान्यता और एक विशाल शुष्क क्षेत्र में जल निकायों के बीच अंतर्संबंधों के उल्लेखनीय उदाहरण हैं। 12 गाँवों के साझा जलग्रहण क्षेत्र का पानी इन दोनों तालाबों से होकर गुजरता है और अंततः बिजरासर खड़ीन तक पहुँचता है और इन गाँवों के सभी निवासियों का अभी भी इन तालाबों के पानी और खड़ीन पर अधिकार माना जाता है।

बाड़मेर जिले में चिलानाडी की कहानी के माध्यम से सतही जल और भूजल के बीच के संबंध को भी खूबसूरती से चित्रित किया गया है। उनकी नाडी में पानी साल में सात-आठ महीने ही आता था। समुदाय ने 'नाडी' में 'बेरी' खोदी और पाया कि बेरी साल भर पानी प्रदान कर सकती है।

यह कहानियां जल निकायों की विविधता की भी याद दिलाती हैं - तालाब, खड़ीन, बेरी, नाडी और टोबा। यह पानी की आवाजाही की सूक्ष्म समझ को दर्शाने के लिए समुदायों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा की समृद्धि का उदाहरण देते हैं - 'बहाव बाले' (प्राकृतिक नालियां), 'नेस्टा' (अतिरिक्त पानी बहने का रास्ता), 'नेक' (पानी के बहाव की दिशा), या 'चादर' (पानी अधिक होने पर जितने क्षेत्र को ढकता है)।

तालाब के अस्तित्व के लिए सामुदायिक संसाधनों जैसे 'ओरण' (पवित्र उपवन) और 'गौचर' आदि का महत्व स्पष्ट रूप से उभर कर आता है। जलग्रहण क्षेत्र तथा आगौर की सुरक्षा भी एक बेहद महत्वपूर्ण विषय है, जो बार-बार उभर कर आया है।

सामुदायिक अपनत्व, प्रबंधन और नियम तालाबों और नाडियों के अस्तित्व के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं और हमारे पास 'आगौर' की रक्षा एवं इसे साफ रखने के लिए विविध व्यवस्थाओं के कई उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, तालाब को स्थानीय देवता को समर्पित करना इन नियमों की अनुपालना सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नियमों की अनुपालना और तालाब की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मजबूत सामुदायिक नियम और जुर्माने आदि की व्यवस्था है। समुदाय द्वारा स्वीकृत नियमों के उल्लंघन पर जुर्माना लगाया जाता है और हाल के दिनों में कई मामलों में पुलिस और प्रशासन के हस्तक्षेप से उन्हें लागू करने की मांग भी की गई है। मासिक शुल्क या समय-

समय पर सामुदायिक योगदान और प्रत्येक परिवार के लिए पानी की मात्रा को लेकर बनाए गए नियम या टेंकरों के लिए दरें तय करना इन तालाबों के रखरखाव के लिए सामान्य व्यवस्था हैं।

जालौर जिले के लूणावास गाँव में राम तलाई को ही ले लीजिए। यहाँ से चूल्हा बनाने के अलावा गाद को हटाया नहीं जा सकता । इन कहानियों में उल्लेखित कुछ सामान्य मानदंडों में शामिल हैं; तालाब, पाल और ओरण में पेड़ों की कटाई को प्रतिबंधित करना, आगौर में शौच या पेशाब करने, कचरा फेंकने की मनाही, आगौर से मृत पशुओं के शवों को तुरंत हटाना तथा आगौर से पशुओं के गोबर और मिंगणी (बकरियों और भेड़ों का मल) को नियमित रूप से साफ रखना आदि महत्वपूर्ण नियम हैं।

नागौर जिले के चावली गाँव के शिवसागर तालाब में गाद को कोई भी परिवार खुद नहीं हटा सकता। ऊंट गाड़ियों और ट्रैक्टर के टायर पानी में प्रवेश नहीं कर सकते। नहाना और कपड़े धोना मना है। परिवारों को एक महीने में केवल 3 टेंकर पानी भरने की अनुमति है। उन्हें तालाब के रखरखाव के लिए हर महीने 100 रुपए का योगदान देना होता है। प्रत्येक दीपावली समुदाय तालाब पर जाकर अगली बारिश तक पानी की उपलब्धता का अनुमान लगाने की कोशिश करता है। जब जल स्तर पूर्वनिर्धारित स्तर से नीचे चला जाता है, तो केवल घड़ा भरके पानी ले जाया जा सकता है। हर निर्जला ग्यारस के दिन समुदाय श्रमदान के लिए तालाब पर इकट्ठा होता है। उसके बाद जो गाद निकाली जाती है लोग अपने खेतों में ले जा सकते हैं।

तालाब के संरक्षण के पारंपरिक तंत्र से परे स्वशासन की संस्थाओं जैसे - पंचायतों ने एक अहम भूमिका निभानी शुरू कर दी है। राणेरी और रामसर गाँव में युवा समूह व्हाट्सएप के माध्यम से सामुदायिक कार्यों के लिए लोगों को जोड़ रहे हैं। उन्नति की सहभागी पहल ने जलसहेली समूह का गठन कर जल संरक्षण में महिलाओं के नेतृत्व को एक पहचान दिलाने में अहम भूमिका निभाई।

दरों को तय करना, सामुदायिक योगदान और जुर्माने के अलावा, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम, अमृत सरोवर योजना, सूखा राहत कार्यों, या मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन योजना से मिले अनुदान का उपयोग इन तालाबों को बनाए रखने, सुधारने और पुनर्जीवित करने के लिए किया जा रहा है। हालाँकि, सार्वजनिक वित्त पोषण की उपलब्धता महत्वपूर्ण होने के बावजूद, इन अनुदानों के प्रभावी उपयोग को लेकर चुनौतियाँ बनी हुई हैं। उदाहरण के लिए, क्या तालाब में पानी की धारण क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना पारंपरिक ज्ञान और जानकारी को इन सार्वजनिक कार्यों में शामिल किया जा सकता है? या तालाब की उपयोगिता को प्रभावित किए बिना पाल को प्रबंधित रखते हुए इसे सुंदर बनाना या इसके नुकसान को रोकना सबसे अच्छा तरीका है?

इन तालाबों के लिए खतरा आगौर या तालाब को पोषित करने वाले जल निकासी चैनलों तक भी फैला हुआ है। यदि इन तालाबों को बचाना है, तो तालाबों, जल निकासी चैनलों, आगौर, ओरण और गौचर को राजस्व अभिलेखों में दर्ज कराने की आवश्यकता है ताकि अतिक्रमण और भू-उपयोग में परिवर्तन दोनों को रोका जा सके।

इस पुस्तक में उन तालाबों और नाडियों के उदाहरण हैं जो पानी के सबसे विश्वसनीय स्रोत बने हुए हैं और अन्य स्रोतों के माध्यम से पानी की उपलब्धता के बावजूद समुदायों द्वारा संरक्षित हैं। कई उदाहरणों में समुदाय पीने के पानी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इन जल निकायों पर निर्भर हैं जबकि अन्य स्रोतों से पानी का उपयोग दूसरी घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए किया जाता है। इसमें ऐसे जल निकायों के उदाहरण भी हैं जो अनुपयोगी हो गए थे, अन्य स्रोतों से पानी की उपलब्धता के कारण उनकी उपेक्षा की गई थी। इन जल निकायों के पुनरुद्धार और कायाकल्प की कहानियां हैं।

गर्मियों में इंदिरा गांधी नहर का बंद होना और पानी की उपलब्धता पर इसका प्रभाव इस लिहाज से वरदान है कि इसने पारंपरिक जल स्रोतों में रुचि को फिर से जगाया। इसने समुदायों में जल के एक स्थायी स्रोत को बनाए रखने की इच्छा पैदा की, जो उनका अपना है। क्या यह सतत रहेगा? यह समय बताएगा।

मुझे आशा है कि यह दस्तावेज न केवल मारवाड़ बल्कि देश के अन्य हिस्सों में भी जलसंरक्षण की सूचना और प्रेरणा देता रहेगा।

वी.के.माधवन
वाटरएड इंडिया

जल स्रोत की उपयोगिता व शुद्धता बनाए रखने के लिए सामूहिक श्रमदान जिसे स्थानीय भाषा में बिराड़, लासिपा, लाह कहा गया, परंपरा से संस्कार बना और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण की व्यवस्था बनी

राग मरुज

जल की जुगत करें जन-जन

बूंद-बूंद को तरसते मरुधरा के लोगों के लिए पानी की हर बूंद अमृत समान है। कुएं, बावड़ी, ताल-तालाब के बिना जीवन संभव नहीं। लोक मान्यता है कि तालाब बनवाना पुण्य कार्य यानि मानव जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल करना है। हर तालाब खास माना जाता रहा है, उसके आस पास बसे समुदायों के लिए। ये तालाब साधारण नहीं हैं, सरोवर नाम से प्रतिष्ठित किए जाते रहे हैं। सरोवर ही फिर बोलचाल में सरवर बना। लोकगीतों में इन्हें "भीम तलाव" या "समंद तलाव" कह कर सराहा गया है। पानी को तरसते लोक मानस में ये समुद्र जितने विशाल पाट वाले, भीमकाय जल स्रोत जीवन का आधार हैं।

जिन सरोवरों के आस पास गाँव बसे फिर जिन गाँवों के आस पास तालाब बनाए गए, उनको बनवाने वालों या उस गाँव को बसाने वाले के नाम के पीछे "सर" यानि कि सरवर (सरोवर) जोड़ा गया; जैसे कि सुंडासर। किन्हीं सुंडा जी के द्वारा गाँव बसाया गया होगा और वहां पानी का स्रोत दोनों ही सुंडासर कहलाए। इसी तरह रामसर भी किन्हीं राम जी के नाम और सर को मिला कर बना है।

मरुक्षेत्र के हर गाँव और उस गाँव के तालाब की कोई न कोई अनूठी कहानी रही है। इन नामों के इतिहास में दर्ज़ हैं कुछ सच्ची कहानियां, कुछ ऐतिहासिक तथ्य, कुछ लोक मान्यताएं; जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही हैं। आज ये लोक चेतना का हिस्सा हैं और इनके किनारे, इनके सान्निध्य में, इनकी साक्षी में लोक संस्कृति फलती-फूलती रही है।

तालाबों के निर्माण और रखरखाव के संदर्भ में विचार करें तो सहज ही समझ में आ जाता है कि सामूहिकता, पारदर्शिता, वास्तविकता, सहभागिता, समानता और जवाबदेही के आधार पर ही तालाब अस्तित्व में आए। आज भी ये इन्हीं मूल्यों के आधार पर बचे हुए हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि ये जीवन के लिए अनिवार्य हैं। जीवन के मूल तत्वों में से एक, पानी का संरक्षण और पानी की उपलब्धता इन ताल-तालाबों के बिना असंभव है।

रेत के अथाह विस्तार में जहाँ पेड़-पत्ती बहुत कम है; कहीं-कहीं तो केवल रेत ही रेत है, प्यास ही प्यास है, वहां इंसान ही नहीं जीव जंतु, पेड़-पौधों का अस्तित्व पानी के बिन कहां! यहाँ पानी की आस मतलब जीने की आस। जीवन की आस हमेशा ही भारी पड़ी है पानी की प्यास पर जिसने मरुभूमि के रहवासियों को हौसला दिया है। पातालतोड़ कुएं खोदने का जज़्बा और बरसात की हर एक बूंद को सहेजने के लिए तालाब बनाने का हुनर दिया है। पानी की एक एक बूंद का संचय कर लेना ही रेगिस्तान में जीने की कला का पहला पाठ है। यहां घी से भी अधिक अमूल्य है पानी।

घी ढुळै तो कईं नहीं, पानी ढुळै तो म्हारो जीव जळै।
पानी ढुळै तो म्हारी सासू लड़े।

मरुधरा की महिलाएं पानी को पूजती रही हैं हर तीज त्यौहार पर, पर्व उत्सव, जन्म, परण (परिणय), जात झड़ूला के अवसर पर। पानी को देख भर लेना किसी उत्सव से कम नहीं रहा है यहाँ की औरतों के लिए। इनसे बेहतर कौन जानता है कि जीवन का होना, जीवन का बचना-बढ़ना और पुनर्जीवन पानी बिना संभव नहीं। इसीलिए पानी की हर बूंद अनमोल है। पहले के जमाने में मोल देकर भी पानी नहीं मिलता था इसलिए अनमोल था और आज मोल देकर लेना पड़ता है। आज भी अनमोल है जल।

मरुधरा की वाचिक परम्परा में अनगिनत लोक गाथाएं, लोकगीत, कहावतें, किस्से कहानियां पानी और तालाब बावड़ी के इर्द-गिर्द सुनने-गुनने को मिलती हैं। लोक स्मृति और पोथियों में जो कुछ मिलता है वह आज भी लोक कंठों में प्रवाहमान है, और अनमोल विरासत के रूप में हमारी पीढ़ी तक हस्तांतरित हुआ है ठीक वैसे ही जैसे पानी के ताल-तालाब और तालाबों में हिलोरे मारता पानी।

"पाणीड़े ने गई रे तलाव,
सात सहेल्यां रो झूलरो, सातों ही गई रे तलाव,
इण सरवारिए री पाल जंवाई धोवे धोत,
पाणीड़े ने चाली ए पणिहार,
घड़ियो पटक दूं ताळ में"

"तालरिया मगरिया रे मोरू बाई लारे रह्या, आयो रे धोरां वाळो देस बीरा बिणजारा ए।"

"कुण जी खुदाया नाडा नाडिया कुण जी खुदाया समंद तलाव"

"गवरल गई रे तलाव राठौड़, गैरो जी फूल गुलाबे रो।"

अपने आलाप की गूंज के साथ हमेशा के लिए किसी अनजान राहगीर के मन प्राण में सदा के लिए बस जाने वाले ये गीत रेत के अछोर विस्तार में जहाँ हिलोरें मारते जल का अहसास करा देते हैं तो वहीं राहगीर इनके सहारे आराम से रास्ता पार कर अपने गंतव्य तक पहुंच जाता है।

परदेसी पंछी भी तो वहीं आते हैं जहाँ तालाब हैं। आज जिन्हें हम सायबेरियन पक्षी कहते हैं वे सैंकड़ों सालों से कुरजाँ के रूप में जानी पहचानी जाती रही हैं। इन्हें संबोधित कर के, इन पर रचे गए गीत महिलाएँ खूब गाती हैं। ये महिलाओं की सखी-सहेली, बहन जैसी हैं जो पानी के तालाबों पर मिल जाती हैं; इनके दुःख दर्द सुनती हैं और दूर देश को लौटती हैं तो इनकी सन्देशवाहक बन कर।

"कुरजाँ ऐ म्हारो भँवर मिला दो सा,
कुरजाँ तू म्हारी भायली तू है धरम की बेन,
संदेसो लेती जाईजे ऐ उडती कुरजड़ियाँ,
कुरजाँ म्हारी हाले नी परदेसाँ रे देस"

ऐसे कितने ही गीत हैं जो तालाब से पानी भर कर लाने को जाते हुए या पानी भर कर लाते हुए महिलाओं द्वारा रचे जाते रहे हैं। आज भी गाए जाते हैं ये गीत, गूंजते हैं मरुस्थल में! ये मरूज हैं, रेत में पानी की मौजूदगी के गीत, लहरों पर हिलोरें लेते सरगम की लय से उपजा राग मरुज! इसकी लय ताल से ही तो जीवन की साँसे चलती हैं, रेत की प्यास तृप्त होती है।

तालाब महिलाओं के मिलने-जुलने की जगह है, बोलने-बतियाने के अवसर के रूप में उनका अपना निजी स्थान जहां पर उनकी तमाम भावनाएँ, आवेग-संवेग, मन की सारी परतें खुल जाती हैं। तालाब को पूजती हैं महिलाएँ और पूजा तो वही जाता है ना जो जीवन का प्रदाता है।

लोक जीवन में तालाब उतने ही मान्य हैं जितनी गंगा, जमुना, सरस्वती नदियाँ। तालाब लोक आस्था के प्रतीक भर नहीं हैं। इनके बनने और आज तक बचे रहने के पीछे गहरा लोक ज्ञान और सुविचारित, सुविकसित जन विज्ञान दिखाई पड़ता है। तालाबों की सबसे ख़ास बात यह है कि ये सबके लिए हैं। मरुक्षेत्र के गाँवों में लोग पानी के टाँकों, कुंडियों, जल भंडारण के अन्य साधनों को ढँककर, बचाकर, ताले लगा कर रखते हैं। तालाब खुले हैं, सर्व सुलभ हैं। बस इनके पानी का उपयोग करने वालों को अपना योगदान करना पड़ता है। इनकी साफ-सफाई, रखरखाव की ज़िम्मेदारी उठानी होती है। गाँव के पंच, बड़े-बुजुर्ग, मौजिज लोग जो भी सामूहिक रूप से तय करें उसी अनुसार अपना योगदान करना पड़ता है।

तालाब सबके हैं, सबके लिए हैं, समान रूप से उपलब्ध हैं, सबकी भागीदारी से बचे हुए हैं, सबको बराबरी से तालाब के प्रति कर्तव्य निभाने हैं, सबको सब कुछ पता होना चाहिए पानी और तालाब के बारे में, नियम क़ायदे सबके ऊपर समान रूप से लागू होते हैं। ये वो मूलभूत आधार हैं जल प्रबंधन के, जिनके कारण तालाब आज भी क़ायम हैं, कामयाब हैं।

सच में ये तालाब भी तो मरुज हैं, मरूलोक से उपजे संगीत की तरह मरुस्थल में जीवन संगीत को संभव करते हुए। इन्हें संभालने की जुगत जन-जन को करनी है।

सुशीला ओझा
उरमूल सीमांत

रेत के टीलों पर गड्ढा कर, नमी किस गहराई तक पहुंची है, इसका अपने हाथ से मापन कर पता लगाने में सक्षम हैं थार रेगिस्तान के अनुभवी लोग। आधुनिक वैज्ञानिक माप का लोक विज्ञान से कुछ ऐसा संबंध है।

जैसलमेर के जल योद्धा चतर सिंह जाम बता रहे हैं, वर्षा मापन का पारंपरिक तरीका

एक अंगुल (1 पुड़पोश) - 1 एमएम

एक कुरोंट (तर्जनी से अंगूठे के बीच की दूरी) - 10-12 एमएम

बेंत (अनामिका से अंगूठे की दूरी) - 13-15 एमएम

मुन्ना हाथ (बंद मुट्ठी से कोहनी तक) - 30 एमएम

गलबाह (अंगुली से कंधे तक) - 45 एमएम

"कण-कण में नमी बसैं, मनां मोकलो हेत, अंतस शीतल जल संजोवैं, तपती बालू रेत।"

अनुपम मिश्र जी ने मरुधरा की रेत के लिए ठीक ही कहा है कि यहां बिखराव में जुड़ाव है। रेत के मोटे कण आपस में जुड़ते नहीं हैं। सूरज की गर्मी से पानी के वाष्पीकरण को रोकते हैं। अंदर नमी संजोकर रखते हैं, जिससे वनस्पतियां बाराहोमास हरी रहती हैं, जीवन को सहारा देती हैं।

मरुधरा में जल स्रोतों के निर्माण में पालीवाल और बंजारा समुदाय का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। तालाबों पर लगे शिलालेख इसका प्रमाण हैं।

मेघराजसर तालाब

पचास गाँवों के पानी का पुख्ता प्रबंध

रेगिस्तान में जल संरक्षण की तकनीक से पालीवाल समुदाय को अलग करके नहीं देखा जा सकता। जहाँ रचे-बसे धरती और प्रकृति के साथ जुड़े। राजनैतिक अंतर्विरोधों के कारण पलायन हुआ, तो इनके द्वारा बनाए गए संसाधनों को समुदाय ने उपयोग किया तथा जहाँ पर पैर जमाए, फिर से नए संसाधन बनाए। जैसलमेर जिले में खड़ीन, तालाबों में बनी छतरियां और गौवर्धन, शिलालेख यह बताते हैं कि उस समय में सीमित मात्रा में बरसने वाले जल के संग्रहण की तकनीक और उपयोग का प्रबंधन कितना समृद्ध रहा होगा। मेघराजसर तालाब भी उसी पारंपरिक तकनीक और प्रबंधन व्यवस्था का उदाहरण है।

बाप निवासी अखेराज खली बताते हैं कि तालाब बनाने की योजना आज की जल संभरण विकास की धारणा के तर्ज पर बनाई गई। कहाँ से कितना पानी बहकर किस दिशा में जाता है और कहाँ-कहाँ पर रोका जा सकता है, यह देखने के बाद योजना बनती थी। उन्होंने संसाधन नक्शे के जरिए क्रमवार नाडे तालाबों की श्रृंखला के साथ मेघराजसर तालाब निर्माण की योजना को स्पष्ट किया। बहाव क्षेत्र में एक के बाद एक पाँच नाडियों के निर्माण के बाद मेघराजसर तालाब बनाया गया। पाँच नाडियों का निर्माण पानी के वेग को कम करने एवं मेघराजसर की भराव क्षमता से अधिक पानी को अलग-अलग स्थानों पर रोक कर उसका उपयोग करना बिना योजना और तकनीक के संभव नहीं था। मेघराजसर और उसकी पाल को सुरक्षित रखने के लिए अतिरिक्त पानी को खड़ीनों में डाला गया तथा वहां पर भी बेरियों का निर्माण किया। इस तालाब का आगौर क्षेत्र तीन सौ अड़तालीस बीघा है।

बाप की इस जल संग्रहण की संरचना से पचास गाँव पानी के मामले में स्वावलंबी हैं। जोधपुर जिले के फलोदी-बीकानेर हाइवे पर स्थित बाप कस्बे का तालाब सात सौ तीस वर्ष पुराना है। सात पीढ़ियों की पेयजल व्यवस्था करने वाले इस तालाब का निर्माण मेघराज पालीवाल ने कराया था। इस तालाब निर्माण की कहानी बेहद दिलचस्प है। क्षेत्र में पानी के संकट के समाधान के लिए मेघराज पालीवाल ने तालाब निर्माण की योजना बनाई तथा कार्य प्रारंभ कराया। तालाब निर्माण कार्य पूर्ण होने से पूर्व ही उनका देहांत हो गया। उनकी पत्नी ने उनके सपने को पूरा किया और योजनानुसार तालाब के निर्माण कार्य को पूरा करवाया।

सरपंच लीला देवी पालीवाल, पूर्व सरपंच जगदीश जी पालीवाल तथा स्थानीय समुदाय ने बताया कि ग्राम पंचायत की विकास योजना एवं भामाशाहों के सहयोग से तालाब की गाद, जलीय घास, जैविक व प्लास्टिक कचरा आदि निकाला गया। प्रवेश द्वार व घाट निर्माण करवाया। पुरानी होने के कारण पाल से पानी का रिसाव होकर पास की दुकानों व घरों में पानी भरने लगा था इसलिए पाल को मजबूत दीवार से बांध कर रिसाव को रोका गया। स्थानीय समुदाय, विशेषतः महिलाओं एवं युवाओं ने श्रमदान कर तालाब को फिर निर्मल बनाने में अहम भूमिका निभाई। यहाँ सरपंच की अध्यक्षता में पंद्रह लोगों की प्रबंधकारिणी समिति है, जो तालाब के विकास का नियोजन, क्रियान्वयन और प्रबंधन को देखती है। प्रतिदिन सौ से अधिक टेंकर इस तालाब से भरे जाते हैं। प्रति टेंकर सौ रुपए का शुल्क तय किया गया है तथा इससे प्राप्त राशि को तालाब के विकास पर खर्च किया जाता है।

तालाब विकास के लिए जहाँ से भी आर्थिक संसाधन उपलब्ध होते हैं, लाने का प्रयास किया जाता है। स्थानीय प्रशासन के सहयोग से मेघराजसर तालाब को केंद्र सरकार की अमृत सरोवर योजना में शामिल कराया गया है। तालाब प्रबंधन के नियम ग्राम पंचायत और समुदाय द्वारा मिलकर तय किए गए हैं तथा घाट पर निर्देश बोर्ड लगाए हैं। तालाब में स्नान करना, कचरा डालना, गंदगी करना, पाल घाट पर शराब पीना मना है। आगौर में गंदगी करना, मिट्टी खोदना, अतिक्रमण करने की पाबंदी है। सरपंच लीला देवी पालीवाल कहती हैं कि “हमारा सपना चारों तालाबों को आपस में जोड़कर झील बनाना व पर्यटन से जोड़ना है। इसके लिए पंचायत ने 12 करोड़ का डीपीआर बनाकर भेजा है।”

मरुधरा के तालाबों पर श्रमदान की परंपरा को पुनः चालू करवाने में जल सहेलियों का अहम योगदान रहा है।

मेघराजसर तालाब, बाप में पालीवाल शैली की छतरियां

राणेरी तालाब

सामुदायिक समरसता का प्रतीक

राजस्थान का ग्रामीण समाज अपनी जलसंचय की पारंपरिक पद्धतियों और जल स्रोतों की देखभाल की जिम्मेदारी को भूला नहीं है। समय बदलने के साथ नहर का पानी पाइपलाइन के जरिए जरूर आया लेकिन समुदाय को तालाब का मीठा जल ही रास आया। जोधपुर जिले की बाप तहसील के राणेरी गाँव की प्रसिद्धि पारंपरिक तालाब और सारंगी वादक पद्मश्री लाखे खां के परंपरागत लोककला के कारण है। इस तालाब को राण सिंह पड़िहार ने कई पीढ़ियों पहले खुदवाया था, इसलिए इस गाँव का नाम राणेरी पड़ा और तालाब को भी इसी नाम से जाना जाने लगा। यह गाँव गुरु जंभेश्वर महाराज के अनुयायी, बिश्नोई समुदाय बहुल्य है। यह समुदाय आज भी अपने गुरु की जीव व पर्यावरण रक्षा और जल स्रोतों के निर्माण व प्रबंधन की शिक्षा का अनुसरण करता है। पानी की उपलब्धता को देखते हुए बिश्नोई जैसलमेर से कानासर गाँव आए और फिर वहां से राणेरी में आकर बसे। पूवर्जों ने अपने समय में एक लाख से अधिक का जन सहयोग कर नाडी के विकास पर खर्च किया था, अतः इस तालाब की आगौर में एक लाखेटा बना है।

लाखूराम जी गोदारा, सरपंच बालूराम जी तथा गाँव के युवा बताते हैं कि “हम तालाब व आगौर को हमारे खेत से ज्यादा सुरक्षित व संरक्षित रखते हैं। राजस्व रिकॉर्ड में आठ सौ अस्सी बीघा आगौर व तालाब की भूमि है तथा दस गाँव के लोग, मवेशी एवं जंगली जीव-जंतु प्यास बुझाते हैं। तालाब के विकास एवं प्रबंधन में बुजुर्गों के ज्ञान व अनुभवी निर्देशन में युवावर्ग सक्रिय है। युवाओं के नेतृत्व में ही सत्रह लाख का जन सहयोग कर दस लाख रुपए तालाब की खुदाई एवं सात लाख रुपए आगौर के गाँव की तरफ वाले हिस्से में जालीदार तारबंदी कराई।” पहले गाँव के लोग व दुकानवाले कचरा व प्लास्टिक की थैलियां फेंकते थे, जो हवा के साथ उड़ कर तालाब में आ जाती थी जिससे पानी गंदा होता था। जालीदार तारबंदी के बाद से यह कचरा तालाब में नहीं आता। गाँव के लोग हर साल श्रमदान भी करते हैं तो आगौर में जो भी कचरा इकट्ठा होता है, उसका निपटारा कर देते हैं।

तालाब से जुड़े विकास कार्यों को पंचायत भी समय-समय पर कराती रहती है। तालाब के पाल की दीवार व घाट निर्माण का कार्य पंचायत के माध्यम से कराया गया है। महिलाएं तथा युवा वर्ग अमावस्या, पूर्णिमा, निर्जला ग्यारस आदि को श्रमदान कर तालाब व आगौर को साफ करते हैं। गाँव वाले मानसून से पहले श्रमदान का आयोजन करते हैं और पूरा आगौर साफ करते हैं। लोग खाद एकत्रित कर अपने खेतों में ले जाते हैं। अनुपयोगी कचरा जला देते हैं। पानी के अंदर पड़े कचरे को जाली से बाहर निकाल कर पाल के पीछे डालते हैं।

गाँव में युवाओं ने एक व्हाट्सएप ग्रुप बना रखा है। जब भी तालाब को लेकर उन्हें एकत्रित होने की जरूरत पड़ती है, वो संदेश डाल देते हैं। आगौर में गंदगी, स्नान, कपड़े धोना, अतिक्रमण, मिट्टी खुदाई आदि पर रोक है। पाल के ऊपर से पशुओं को पानी पिलाना मना है। ट्रेक्टर टेंकर का टायर पानी में डालना मना है। दूसरे गाँव के लोगों को केवल पीने के पानी की छूट है। सोलर कंपनी वालों को पानी का टेंकर ले जाने की मनाही है। जब तालाब में पानी कम पड़ने लगता है, तो गाँव वाले टेंकर से पानी ले जाना बंद करवा देते हैं।

जल की निर्मलता के लिए आगौर को साफ करती राणेरी की महिलाएं

सैकड़ों हाथ जुडते हैं, आगौर का कचरा साफ करने के लिए

जन सहयोग व सरकारी योजनाओं से कराते हैं नाडी का विकास

वनस्पति और वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए सक्रीय हैं मरुधरा की महिलाएं

पद्मश्री सम्मानित सारंगी वादक लाखे खां
सरोवर के जल और सारंगी के संगीत की मिठास राणेरी की पहचान है।

चाँदासर तालाब

समुदाय ने फिर से संवारा

जब आवश्यकताएं किसी संसाधन से पूरी हो जाती हैं, तो समुदाय उस संसाधन के रखरखाव पर कोई विशेष ध्यान नहीं देता। लेकिन जैसे ही उसे उस संसाधन की उपयोगिता का अहसास होता है, वो फिर से उस संसाधन के सार संभाल में जुट जाता है। कुछ ऐसी ही है हमारे चाँदासर तालाब की कहानी। जोधपुर जिले के कानासर गाँव में नहर आते ही तालाब का रखरखाव करना बिल्कुल बंद कर दिया लेकिन तीन महीने की नहरबंदी ने समुदाय को वापस तालाब की ओर लौटने पर मजबूर कर दिया।

चाँदासर तालाब की खुदाई चांदाजी पालीवाल ने कारवाई थी। कभी पानी के लिए इस तालाब पर आस-पास के पंद्रह गाँव आश्रित थे। लेकिन नहर और पाईपलाइन आने के बाद तालाब की स्थिति बेहद खराब हो गई। तालाब का आगौर चार सौ बीघा का है लेकिन पूरे में विलायती बबूल का कब्जा हो गया। कानासर जल सहेली सदस्य मीरा बताती हैं, “मुझे इस गाँव में आए चालीस वर्ष हो गए। कानासर नाडी से सिरघड़ा पानी ले जाती थी। गाँव के लोग नाडी की अच्छी देखभाल करते थे। पिछले पंद्रह-बीस वर्षों के दरमियान नहर व पाइप लाइन से पानी की सप्लाई प्रारंभ हुई, तो कानासर के लोगों ने पारंपरिक चाँदासर तालाब को भुला दिया। कभी पानी से भरा रहने वाला तालाब व आगौर मिट्टी, कचरा व विलायती बबूल की झाड़ियों से भर गया।”

नहर में अक्सर गंदा पानी आया करता था जिससे परेशान होकर गाँववालों ने एक बैठक बुलाई जिसमें उन्होंने सरपंच को भी शामिल किया और मनरेगा के अंर्तगत चाँदासर तालाब के आगौर की साफ सफाई, पाल की मजबूती के लिए मिट्टी डलवाने आदि का काम किया। लेकिन केवल मनरेगा के अन्तर्गत किए जाने वाले कार्य से समुदाय को संतुष्टि न मिली। समुदाय ने आम सहमति से तालाब के पूरे चार सौ बीघा से विलायती बबूल को हटाने और आगौर के ढलाव को सही करने की ठानी ताकि बारिश का सारा पानी तालाब में इकट्ठा किया जा सके।

समुदाय ने मिलकर आपसी सहयोग के तीस लाख रुपये इकट्ठे किए और मशीन लगवाकर विलायती बबूल की कटाई का काम शुरू किया। इसके साथ मनरेगा का काम लगातार चलता रहा। इस तालाब के पास एक लाखेटा भी बनाया गया है। लाखेटा का मतलब तालाब के पुनरुद्धार के लिए समुदाय ने एक लाख से अधिक राशि का सहयोग दिया। इस जन सहयोग से तालाब से मिट्टी निकालकर पास में टीला बनाया गया, उसे ही लाखेटा कहा गया।

आखिर में अच्छी बरसात हुई। तालाब में पानी इकट्ठा होना शुरू हुआ। समुदाय ने इस तालाब का उचित रखरखाव शुरू किया। पूर्णिमा, अमावस्या और एकादशी के दिन तालाब की साफ-सफाई और मिट्टी डालने की परंपरा को फिर

से जीवित किया। तालाब के आस-पास कोई गंदगी न फैलाये इसको लेकर नियम बनाए। तालाब के आगौर क्षेत्र में शौच व पेशाब करने की मनाही है। तालाब में कोई नहा नहीं सकता।

इसके अलावा यहाँ के समुदाय ने सोलर कंपनियों को इस तालाब से पानी ले जाने पर रोक लगा दी क्योंकि ये पानी गाँव वाले पीने के लिए उपयोग करते थे और सोलर कंपनियाँ पीने के साथ-साथ सोलर पार्कों के निर्माण में। यह गाँव के द्वारा अपने जल संसाधन के संरक्षण के लिए उठाया गया एक साहसिक कदम था। समुदाय के इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप तालाब का पानी पहले की तरह ही स्वच्छ और निर्मल हो गया। पहले नहरबंदी के समय उन्हें बाप स्थित मेघराजसर तालाब से पानी लाना पड़ता था, वहीं अब उन्होंने अपने तालाब की व्यवस्था को सुधार पानी के लिए खुद को आत्मनिर्भर बना लिया। तालाब के रखरखाव के लिए गाँववालों ने एक साथ मिलकर तालाब को साक्षी मानकर कसम खाई कि वो अपने तालाब का संरक्षण करेंगे और इस पानी की निर्मलता को बनाए रखेंगे। कानासर गाँव के निवासी फरीद का कहना है कि "गर्मियों में जब हमें पानी की सबसे ज्यादा जरूरत पड़ती थी तब नहरबंदी के कारण हमें जल संकट का सामना करना पड़ता था। हमारे पास खुद के लिए और अपने पशुओं के लिए पानी की किल्लत हो जाती थी। इस तरह लोगों का नहर से भरोसा उठ गया और हमें लौटकर अपने तालाब की ओर वापस आना पड़ा।"

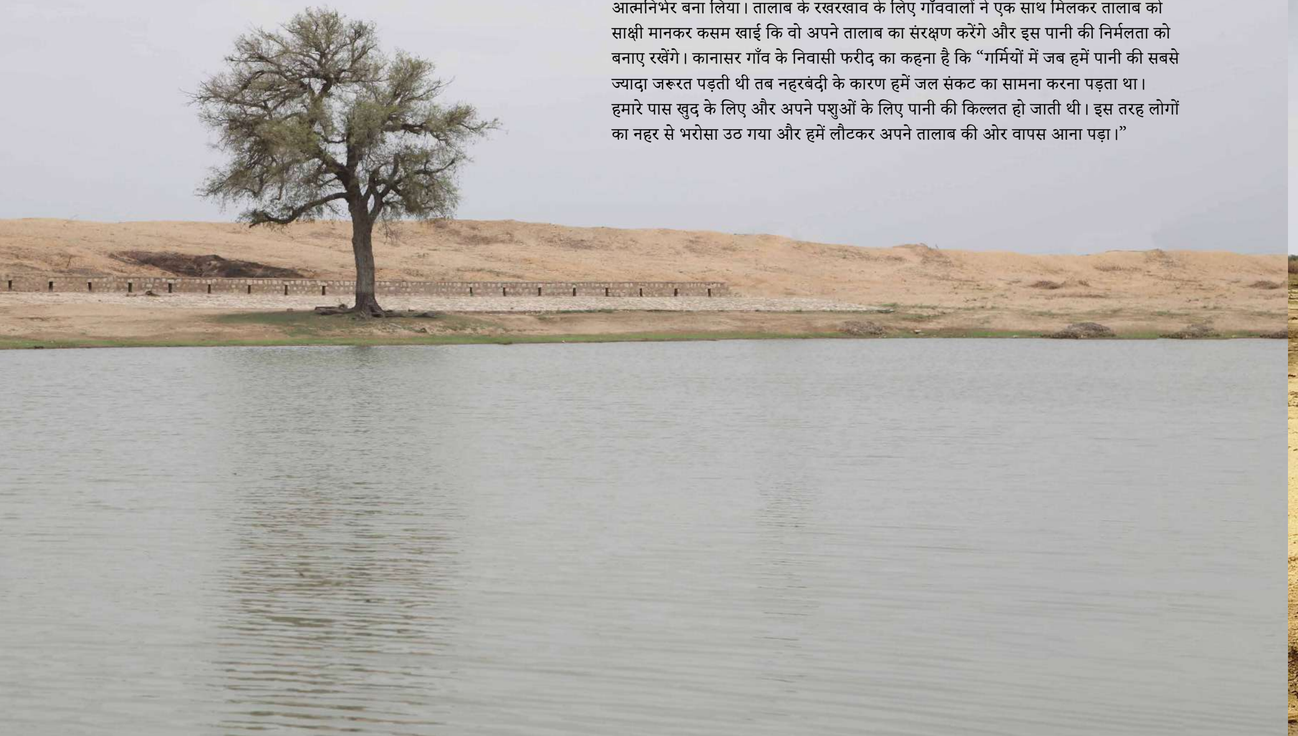

तालाब निर्माण तथा जीर्णोद्धार के समय जन सहयोग से लाख रुपए से अधिक की मिट्टी निकालकर बनाए गए टीले को लाखेटा कहते हैं। लाखेटा गाँव का गौरव है।

सांगुरी नाडी

पिछले पचास सालों से जल से लबालब है सांगुरी नाडी

सांगुरी नाडी अखाधना गाँव में स्थित है। सांगुरी नाडी के जल पर आस-पास के पंद्रह गाँव आश्रित हैं। अकाल और गर्मी के दौरान नहरबंदी की कठोर परिस्थितियों में भी इस नाडी का पानी नहीं सूखता। गाँववालों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार पिछले लगभग पचास सालों से इस नाडी का पानी कभी नहीं सूखा। वह इसका कारण इस नाडी के तल को मानते हैं। इस नाडी के तल में काफी मात्रा में चिकनी मिट्टी है जो पानी को जमीन में नहीं जाने देती और इस कारण पानी नाडी में इकट्ठा रहता है। इसके अतिरिक्त इस नाडी का आगौर एक हजार बीघा में फैला हुआ है। थोड़ी देर भी अच्छी बारिश होने से पानी नाडी में इकट्ठा हो जाता है। यदि दो से तीन अच्छी बारिश हो जाए, तो आवक सही होने के कारण साल भर का पानी इकट्ठा हो जाता है।

यदि इस तालाब में किसी वर्ष पानी कम हो जाता है तो पनिहारी को पानी की मटकी ले जाने की छूट रहती है लेकिन, पीने के पानी के टेंकर को भरने के लिए शुल्क वसूला जाता है। शुल्क का निर्धारण गाँव वाले मिलकर करते हैं और वो सभी पर लागू होता है। बाद में उस रुपए का उपयोग नाडी की मरम्मत और मिट्टी निकालने आदि के काम में किया जाता है। यदि पानी बिल्कुल कम हो जाता है तो पूर्ण रूप से टेंकरबंदी लागू कर दी जाती है।

गाँव वालों का इस नाडी के प्रति बेहद लगाव है। लोग जनसहयोग से इसके आगौर क्षेत्र से विलायती बबूल और अन्य झड़ियों को साफ करते रहते हैं। जब इस क्षेत्र में बड़े मेले लगते हैं, उस दौरान साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है। भाद्रपद के महीने में रामदेवरा में विशाल मेला लगता है। लाखों श्रद्धालु लोकदेवता रामदेव जी के दर्शन के लिए रामदेवरा जाते हैं। सांगुरी नाडी से होते हुए भी हजारों श्रद्धालु गुजरते हैं। इस दौरान इस नाडी के आगौर क्षेत्र में एक आदमी रखते हैं। यह व्यक्ति लोगों को तालाब में स्नान करने, आगौर में शौच आदि गंदगी नहीं करने की जानकारी देता है। देखरेख के लिए रखे गए व्यक्ति को मजदूरी का भुगतान जन सहयोग से किया जाता है।

सांगुरी नाडी के आगौर क्षेत्र से सटी हुई ओरण की जमीन है जहाँ पशुओं को चराने की व्यवस्था है। गाँव के पशुधन को कहीं बाहर नहीं जाना पड़ता क्योंकि उनके पास चारे और पानी दोनों की व्यवस्था है। जोधपुर में कई जगह सोलर पार्क निर्मित किए गए हैं। यहाँ भी सोलर कंपनियाँ सर्वे के लिए आई थीं लेकिन गाँववालों ने सोलर कंपनियों का विरोध किया। यहाँ समुदाय इस बात को लेकर चिंतित है कि यदि यहाँ सोलर प्लांट लग गया तो पानी की आवक और चारे की उपलब्धता दोनों ही प्रभावित होगी जो मूलभूत आवश्यकता पानी और आजीविका से जुड़ा हुआ है।

गाँव के निवासी जेठाराम का मानना है कि “यहाँ पर लोग नहर के पानी पर निर्भर नहीं हैं, तालाब के पानी को सर्वोपरि मानते हैं। बरसात का पानी हमारे लिए अमृत है, इस पानी से शरीर स्वस्थ रहता है।” यहाँ जल सहेली समूह भी अपने जल स्रोत के रखरखाव में पीछे नहीं है। जल सहेली बादली देवी के अनुसार – “इस नाडी का विकास पिछले दस सालों में हुआ। यहाँ हम सभी महिलाएं भी एकादशी, अमावस्या और पूर्णिमा के दिन नाडी और नाडी के आगौर की साफ-सफाई करते हैं।”

एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पारंपरिक ज्ञान का संप्रेषण

सांगुरी नाडी के आगौर की विशेषताओं को समझा रही है जल सहेली

बगोलाई नाडी

मेघवाल समुदाय द्वारा निर्मित नाडी आज भी उपयोगी है

मालम सिंह की सिड में आज से दस पीढ़ी पहले धर्मपरायण बगाराम जी मेघवाल द्वारा पुण्य के नाम पर बगोलाई नाडी का निर्माण कराया गया था। लेकिन नाडी निर्माण के पीछे एक और कारण जल स्रोतों में सामाजिक भेदभाव भी रहा। मालम सिंह की सिड में कई बड़े एवं मुख्य जल स्रोत हैं। पानी की वैकल्पिक व्यवस्था होने के कारण स्रोतों की प्रबंधन व्यवस्था टूट गई। लेकिन बगोलाई नाडी को मेघवाल समुदाय के लोगों ने बचाए रखा है तथा इसके पानी का उपयोग करते हैं। गाँव के लोगों ने बताया कि बगाराम जी धर्म-पुण्य में विश्वास रखते थे। एक बार वो तीर्थ करने हरिद्वार गए। वापस लौट कर उन्होंने गर्ग समुदाय की इक्कीस कन्याओं का विवाह करवाया तथा उसी दौरान इस नाडी का निर्माण कराया। इस नाडी के बगल में 'चंचोलाई नाडी' है जोकि चचाराम ने ख़ुदवाई थी। चचाराम जी को बगाराम जी अपना धर्म भाई मानते थे। यह दोनों नाडी यहाँ के लोगों और पशुओं के लिए पेयजल का मुख्य स्रोत है।

इस नाडी का तल बहुत मजबूत है। पानी पाताल (जमीन) में नहीं जाता। एक बार बरसात से भरने पर सालभर पानी रुका रहता है। आगौर ढलान वाला है तथा बरसात का पूरा पानी नाडी में आता है। गाँव के लोग नाडी व आगौर की देखरेख करते हैं। दस गाँवों के लोग जल संकट के दौरान इस नाडी से पानी ले जाते हैं। ग्राम पंचायत द्वारा पूर्व में पाल दीवार व घाट निर्माण कराया गया था। तीन-चार साल में महात्मा गांधी नरेगा के तहत मिट्टी निकालने का काम कराया जाता है। मेघवाल समुदाय को जब मिट्टी निकालने की जरूरत महसूस होती है तो वे जनसहयोग से मिट्टी निकालते हैं। नाडी की प्रबंधन व्यवस्था भी मेघवाल समुदाय के लोग करते हैं। आगौर को साफ-सुथरा रखने के लिए नियम बनाए गए हैं। आगौर में गंदगी करने पर इक्यावन सौ रुपए का दंड लगाते हैं। पानी कम पड़ता है, तब टेंकर भरने पर रोक लगाते हैं ताकि पशुओं व जीव-जंतुओं के लिए पानी बचा रहे। बाबा रामदेव मेले के दौरान पद यात्री आते हैं, तब जन सहयोग से एक व्यक्ति रखते हैं जो यात्रियों को तालाब व आगौर में गंदगी करने, स्नान करने से रोकता है।

नाडी का आगौर मुरम वाली मिट्टी का है तथा आस-पास के लोग मिट्टी खोद कर ले जाते हैं। दिन में तो समुदाय आगौर का ध्यान रखता है। लेकिन कई बार लोग रात में मिट्टी खोदकर ले जाते हैं। गाँववालों ने कई बार प्रशासन से इसकी शिकायत की लेकिन इसपर कोई कार्यवाही नहीं हुई। गाँव के लोग भविष्य में चंचोलाई व बगोलाई नाडी को जोड़कर एक करना चाहते हैं जिससे पानी का भराव अधिक हो एवं जरूरत के अनुसार पानी मिले।

जब 'हर घर जल योजना' के बाद इस नाडी की प्रासंगिकता को लेकर सवाल पूछा गया तो गाँव के निवासी जैसलाराम का कहना था "सरकार 'हर घर जल योजना' के तहत हर घर नल लगवाएगी, लेकिन उस नल में पानी आएगा या नहीं इसकी कोई गारंटी नहीं है। हमारे घर पाइपलाइन है। उसमें रोजाना तीस लीटर पीने का पानी आता है। मेरे घर नौ गाय, सत्तर बकरी और सतह परिवार के सदस्य हैं। अब बताइए मैं इस तीस लीटर पानी का क्या करूँ।" इस तरह गाँव वाले अपनी नाडी को ही जल के भरोसेमंद स्रोत के रूप में देखते हैं।

हमारी नाडी, हमारा भरोसा

मालमसिंह की सिड बगोलाई नाडी की पाल पर लगती है जल प्रहरियों की चौपाल

बिपरासर तालाब

समाज व तालाब का एकाकार होना बिपरासर की मज़बूती है

लोगों के जीवन के शुभारंभ से मोक्ष यात्रा तक के सभी संस्कारों में रचा-बसा है बिपरासर। शिशु के जन्म के समय जलवा पूजन, विवाह के समय निमंत्रण-पत्र पर तालाब का छाया चित्र और तालाब का नेतरा (लड़के के विवाह पर तालाब के लिए राशि समर्पित करना), नव विवाहिताओं सहित नई पीढ़ी को तालाब के महत्व और प्रबंधन व्यवस्था से संस्कारित करता समदरिया हिलोरने का महोत्सव, पाल किनारे मजबूत खेजड़े की डाल पर श्रावण की तीज के झूले, इस गाँव में पली-बढ़ी ससुराल गई बहन-बेटियों का मिलन समारोह, अक्षय तृतीया के दिन अच्छे जमाने (अच्छी फसल) का अनुमान तथा अंतिम समय में बिपरासर के पानी और पाल की माटी में मोक्ष का मोह खींच लाता है तालाब पर।

नेतसी के निवासी उम्मेद सिंह बताते हैं कि "इस साल गर्मियों में नब्बे दिन की नहरबंदी के दौरान रामगढ़ नगर सहित आस-पास के दर्जनों गाँव बिपरासर से पानी लेकर गए। कोई मोटर साइकिल पर जैरिकन से, तो कोई गाड़ियों में कैंपर भर कर। हमारे गाँव में भी नहर का पानी आता है, लेकिन हमारा उस पर भरोसा नहीं है। पराए पानी से प्रीत नहीं है, 'बिपरासर है तो हम हैं और हम हैं तो बिपरासर'।"

बिपरासर को बनाए रखने वाले संस्कार जीवन की सांसों के साथ घुले हैं तथा लहरों के साथ सुर मिलाते हुए लोकगीतों की राग बने हैं। यहाँ एक लोकगीत "ज्याजबाई नै जोवण दै" का एक अंतरा तालाब को संबोधित करता है, "डिगी-डिगी पाळ म्हाजै बिपरासर री कईजै, म्हाजौ भरियौड़ो बिपराणो ताळाब, ज्याजबाई नै जोवण दै।" मतलब हवाई जहाज में अपने गाँव की पहचान बताते हुए महिला कहती है, यह ऊंची पाल हमारे बिपरासर की है और पानी से लबालब भरा हुआ है। ऐसे असंख्य लोकगीतों में बसा है, बिपरासर।

इस तालाब से लोगों के असीम प्रेम के आपको कई उदाहरण मिल जाएँगे। एक दिलचस्प किस्सा इस गाँव में रहने वाले दुर्ग सिंह से जुड़ा हुआ है। नेतसी से हाबुर जा बसे दुर्ग सिंह उनड़ ने अंतिम समय में अपने परिजनों से बिपरासर का पानी देने और अंतिम क्रिया-कलापों में बिपरासर का पानी उपयोग करने की इच्छा जाहिर की। बिपरासर में उस समय टेंकर भरने की मनाही थी। दुर्ग सिंह के परिजन नेतसी आए तथा टेंकर भरने की अनुमति मांगी। अंतिम समय में कौन इन्कार करता। दुर्ग सिंह के परिजन टेंकर से पानी लेकर गए तथा उनकी अंतिम इच्छा पूरी की।

इसी तरह का एक और किस्सा है। माने खां एकल व्यक्ति अपने भाई-बंधुओं के साथ रहते थे। नहरी इलाके में मुरबों का आवंटन होने तथा पशुओं के चराई की बेहतर व्यवस्था के कारण भाई-बंधु माल-मवेशी लेकर सत्तर किलोमीटर दूर कुरिया गाँव जा रहे थे। लेकिन माने खां साथ जाने के लिए नहीं माने। अंत में उन्होंने परिजनों के सामने शर्त रखी कि यदि मेरा अंतिम संस्कार बिपरासर करोगे, तो मैं साथ चलने के लिए तैयार हूँ। परिजन वादे के पक्के, माने खां ने देह त्यागी और उनका अंतिम संस्कार बिपरासर की पाल पर किया गया। तालाब की चौभ में बनी माने खां की बेरी उनकी याद में बनवाई गई। यहाँ के लोग कहते हैं कि हमारा कर्म तेज है (किस्मत अच्छी है), जो हमें बिपरासर जैसा तालाब मिला है।

जल सहेली लीडर सुगन कवंर बताती हैं, "सत्रह-अठारह किलोमीटर दूर सोनू, हाबुर, सियांबर, हेमा, बांधा, खुईयाला गाँव की सरहदों का पानी बिपरासर में आता है। लेकिन पानी आवक क्षेत्र को राजस्व रिकॉर्ड में आगौर के नाम दर्ज नहीं करा सके। केवल पानी के नाले दर्ज हैं। हमारी सरहद में लगभग तीन किलोमीटर का क्षेत्र आता है, जिसकी सुरक्षा हम करेंगे। किसी कंपनी को आवंटित नहीं होने देंगे। अन्य गाँवों की सुरक्षा हमारे बस में नहीं है।"

सोनू गाँव के मगरे से हेमा गाँव का जियादेसर तालाब भरता है, उसके बाद बिपरासर भरता है। बिपरासर की चादर चलती है, तब तीन हिस्सों में बहता हुआ पानी खड़ीनों में जाता है। जितने गाँवों से पानी आता है, सभी का तालाब, बेरियों और खड़ीनों में हक है। हेमा ग्रामदानी गाँव है, इसलिए वहां की जमीन आवंटित करना सरकार के हाथ में नहीं है। लेकिन सरकार द्वारा सोनू गाँव में चूना पत्थर की खदानों के आवंटन, सियांबर, कुछड़ी, हाबुर में सौर ऊर्जा कंपनियों को मगरे में जमीन के आवंटन से लोगों में इस

बिपरासर के किनारे आज भी लगती है जल-प्रहरियों की जाजम

सुदृढ़ जल प्रबंधन व्यवस्था के नष्ट होने का डर है। पीढियों से अकालों और प्राकृतिक संकटों के सामने टिके रहने वाले लोग कहते हैं कि सरकार जब जमीनों का आवंटन करती है, तब ग्राम पंचायत या गाँव को नहीं पूछती, क्योंकि रिकॉर्ड में वह राजकीय जमीन है।

सामाजिक तौर पर पानी के बहाव के रास्तों को रोकना गलत माना जाता है। सतह किलोमीटर से बहकर आने वाले पानी को पीढ़ियों से किसी ने नहीं रोका। भले ही राजकीय रिकॉर्ड में यह जमीन महज एक बंजर टुकड़ा है, लेकिन इस जमीन पर जीवन है। जलीय सरहद के सभी गाँवों को मिलाकर दो लाख मवेशी और बीस से पच्चीस हजार इंसान बिपरासर तालाब पर आश्रित हैं। तालाब बनाना और जीवन चलाना भी विकासक्रम है। हजारों साल पूर्व इस गाँव के पूर्वजों ने साल दर साल मेहनत कर इसे बनाया। हरेक पीढ़ी इसमें अपना श्रम जोड़ती रही। तभी नाडी से नाडा और फिर विशाल सरोवर बना है।

तालाब बनाने से ज्यादा महत्वपूर्ण है, उसकी सामाजिक प्रबंधन व्यवस्था। बिपरासर का अलिखित विधान और नियम तोड़ने पर सामाजिक दंड का प्रावधान है। पूर्वजों के बनाए हुए नियमों के साथ जरूरत पड़ने पर नए नियम भी बनते हैं और लागू होते हैं। तालाब में हाथ-मुँह व पैर धोना, स्नान करना, कपड़े धोना, पाल-घाट पर शराब पीना मना है। मरे हुए पशु को आगौर से बाहर डालते हैं। आगौर क्षेत्र की तरफ शौच आदि करने तथा कचरा डालने की पाबंदी है। अमावस्या व पूर्णिमा को गोबर, मींगणी की खाद को बुहार कर बाहर फैंका जाता है। पशुओं को पानी पिलाने के बाद भराव क्षेत्र में रोकना मना है। आगौर से हरी टहनी नहीं काट सकते। पर्याप्त पानी है, तब तक टेंकर से पानी ले जाने की छूट है। पानी कम पड़ने लगता है, तब टेंकर बंद करते हैं। केवल सामाजिक कार्यों में गाँव की अनुमति से टेंकर भरने की छूट है। जितने गाँवों की सरहद से पानी आता है, उनके तालाबों में पानी समाप्त होने पर वह भी पीने के लिए टेंकर से पानी ले सकते हैं। नियम सभी पर लागू हैं, इसलिए उनकी मान्यता भी है।

जीयादेसर तालाब

जीवन देता है, हेमा का जीयादेसर

जीयादेसर को टुकड़ों में तोड़कर अर्थ समझें, तो जीया अर्थात जीवन, दे अर्थात देना और सर का मतलब सरोवर, सागर, तालाब। ऐसा ही है हेमा गाँव का जीयादेसर तालाब। दस-बारह गाँवों के लोग, उनकी आजीविका के वाहक खेती और पशु तथा असंख्य प्राकृतिक जीव-जंतुओं की उम्मीद पर खरा है। उम्मीद है, वर्ष भर पीने योग्य मीठे जल की उपलब्धता। रेगिस्तान में अकेले किसी तालाब को देखना उचित नहीं है। पानी की धारा को समग्र रूप में देखने से समझ आती है पानी संग्रहण की श्रृंखला। वर्षा की बूंदों से बनी जलधारा का अग्रभाग जीयादेसर है, तो मध्य में नेतसी का बिपरासर और अंतिम छोर में बिजरासर की विशाल खड़ीन, फिर खड़ीनों की श्रृंखला। बीच में असंख्य छोटे-मोटे नाडे-नाडियां, टोबा, तांडे और बेरियां। मानव नियम एवं आस्था जनित वर्जनाएं सहारा देती हैं, प्राकृतिक एवं पारंपरिक संसाधनों की प्रबंधन व्यवस्था को। सात जोगनियों (सात देवियों) की आण (नियम पालना की स्वशासित शपथ) इंसान को रोकती है बिगाड़ करने से। बिगाड़ करने वालों पर देवीय प्रकोप की कई कहानियां प्रचलित हैं। तालाबों पर बने थान (मंदिर) पूजा के साथ-साथ पारंपरिक प्रबंधन व्यवस्था का भाग रहे हैं, और आज भी हैं। गाँव के लोगों के अनुसार, सोनू गाँव के एक व्यक्ति ने आण तोड़ी, वृक्ष पर कुल्हाड़ी चलाई, तो खून की धार निकली। रामगढ़ के प्रताप कुम्हार का खेत ओरण में था। उसके परिवार में सुख-शांति नहीं रहती थी। किसी ने सलाह दी कि ओरण में खेत बीजने का फल है। उसने शपथ लेकर खेत छोड़ दिया।

सोनू गाँव के विशाल मगरे (उच्च चट्टानी क्षेत्र) की दक्षिण-पश्चिमी ढलान के पानी बहाव से बने बाले (बरसाती नाला) का पानी जीयादेसर में आता है। जीयादेसर का नेस्टा (अतिरिक्त पानी का निकास मार्ग) चलता है तो पानी बिपरासर तालाब में जाता है। तालाब की चादर (अतिरिक्त बहाव) तीन भागों में विभाजित होती है तथा बकरथला, बिजरासर खड़ीन को भरती है। सिलसिला यहीं नहीं रुकता। एक के बाद एक आगे की खड़ीनें भरती जाती हैं। पूर्वजों ने एक-एक बूंद को बेकार नहीं जाने दिया। आज तो जमीन का स्तर, पानी का वेग और बहाव जानने के यंत्र आ गए। सरकारी खजाने से धन राशि भी उपलब्ध है। उस जमाने में अनुभव से उपजा ज्ञान और बिराड़ (जन सहयोग) ही बजट था। निचले स्थान पर पानी को रोकने की जगह देखते और तालाब बनाने की योजना बन जाती। छोटे से बड़ा और बड़े से विशाल जल स्रोत बन जाता। वेग से बहते पानी को कहाँ से तालाब में प्रवेश कराना है, क्षमता के अतिरिक्त कहाँ से निकालना है, निकाले गए को कहाँ रोकना है और क्या उपयोग करना है, यह व्यवस्था साल दर साल के अनुभव और मेहनत से संभव हो पाई है। गाँव के सभी लोग पूर्वजों की इस मेहनत का सम्मान करते हैं, पीढ़ियों से जीवन देने वाले जीयादेसर का सम्मान करते हैं, तालाब की देखभाल करते हैं।

जीयादेसर में पानी नया-पुराना होता है, अर्थात वर्ष भर रहता है। पिछली बरसात का पानी समाप्त नहीं होता, अगली वर्षा का पानी आ जाता है। बिपरासर जाने वाले बरसाती नाले में पाँच-छः बेरियां है। तालाब व बेरियों से बारहमास पानी उपलब्ध रहता है। तालाब से हेमा के अतिरिक्त सेरा, हाबुर, उनराई, सोनू, जोगा, रामगढ़ के लोग व पशुधन अपनी प्यास बुझाते हैं।

गाँव के लोग हर साल श्रमदान व सरकारी सहयोग से मिट्टी निकलवाते हैं। पानी आवक के नालों को ठीक करते हैं। उनमें रुकावट नहीं आने देते। नेस्टा मजबूत करते हैं। भराव क्षेत्र के आस-पास साफ-सफाई कराते हैं। पशुओं को भराव क्षेत्र में नहीं रुकने देते। स्नान करने की सख्त पाबंदी है। तालाब में पानी कम पड़ने लगता है, तो ट्रेक्टर टंकी भरने पर रोक लगाते हैं, ताकि पशुओं व जीव-जंतुओं के लिए पानी बचा रहे। सभी इन नियमों की पालना करते हैं। इन नियमों के उल्लंघन पर आज तक किसी को दंडित तो नहीं किया, लेकिन डर जरूर बनाते हैं। लोगों में देवियों के प्रकोप का भी डर रहता है।

ग्रामदानी गाँव है हेमा। भूमि संबंधित सभी तरह के अधिकार ग्रामसभा के पास है। आगौर और तालाब राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज है। नदी, नाले भी दर्ज हैं। ग्राम पंचायत ने ग्यारह सौ बीघा नई गौचर आवंटित की। गौचर में पाँच नई नाडियां बनवाई गई और उनका आगौर राजस्व में दर्ज कराया गया। बारह गाँव के पशुओं की चारे-पानी की व्यवस्था है। ग्रामदानी गाँव में सरकार गाँव की सहमति के बिना भूमि संबंधी निर्णय नहीं कर सकती। ग्राम पंचायत समय-समय पर तालाब, ओरण, गौचर संबंधी गाँव वालों द्वारा सुझाए गए कार्य करवाती है। पारंपरिक व्यवस्था के अनुसार जितने गाँवों की सरहद से बह कर पानी आता है, वहां पर रोक कर उपयोग किया गया है, उन सभी गाँवों की पानी एवं कृषि उपज पर हिस्सेदारी होती है। बिजरासर खड़ीन में बारह गाँवों की सरहदों का पानी आता है। तालाब व खड़ीन में इन सभी गाँवों की समान भागीदारी है।

कुम्हारकोठा नाडा

तालाब की सुरक्षा व संरक्षण गाँव की पहली जरूरत

जैसलमेर से पहले बसाया गया था कुम्हारकोठा गाँव। जहाँ पानी की आवक और भंडारण की संभावना बनी, वहीं पर बस्तियों की बसावट हुई है रेगिस्तान में। कुम्हारकोठा भी इसी प्रकार की बस्ती है। छोटे नाडे के निर्माण के साथ बस्ती बसी। लगभग दो सौ घरों की आबादी वाले इस गाँव में कुम्हार, मेघवाल, सुथार, स्वामी समुदायों का समावेश है। पीढ़ियों के क्रमिक विकास के परिणामस्वरूप बस्ती गाँव बना और नाडा तालाब बना।

तालाब साफ सुथरा है इसलिए सिपला, धूलिया, बालाणियों की ढाणी व जामड़ा गाँव के लोग भी यहाँ से पानी ले जाते हैं। तालाब तो इन गाँवों में भी है, लेकिन वहाँ इनकी सार-संभाल नहीं होती। पूर्वजों ने कई पीढ़ियों पहले बिराड़ (जन सहयोग) कर एक नाडा खुदवाया था। बाद में पीढ़ी दर पीढ़ी इसे लोग खोदते रहे और नाडा तालाब बन गया। इसका नाम अब भी कुम्हारकोठा नाडा है। आगौर अच्छा है, डेढ़-दो किलोमीटर दूर पहाड़ी व मगरे का पानी आता है। तालाब का भराव क्षेत्र राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज है, लेकिन आगौर का पता नहीं है। गाँव के लोग इस तालाब की सुरक्षा करते हैं और किसी को बिगाड़ नहीं करने देते। जब तालाब के पानी की आवक भूमि पर सड़क बन रही थी तब गाँव के लोगों ने मिलकर थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई ताकि पानी की आवक न रुके। गाँववालों के लिए तालाब ही पीने के पानी का मुख्य साधन है। जब मिट्टी भर जाने के कारण तालाब में पानी कम रुकने लगा तो गाँववालों ने पिछले साल हरेक घर से एक हजार रुपए का चंदा इकट्ठा किया तथा मिट्टी निकलवाई। पहले जहाँ तीन-चार महीने पानी रुकता था, वहीं अब आठ महीने रुकने लगा।

जल सहेली लीडर मिश्रादेवी व हमतू देवी के अनुसार, “सरकारी योजना से होदी बनी है तथा पानी की सप्लाई आती है, लेकिन भरोसा नहीं है। पहले खुहड़ी से आता था, बाद में सिपला के ट्यूबवैल से जोड़ा गया, अब फतेहगढ़ वाली पाइप लाइन से नहर का पानी आता है। कभी आता है, कभी नहीं आता। नहर के पानी की नियमितता पर विश्वास नहीं है तथा शुद्धता को लेकर मन में शंका है। तालाब का पानी अमृत है।”

तालाब की देखभाल के लिए सामाजिक नियम भी बने हुए हैं। कुछ नियम पुरखों से सीख के रूप में विरासत में मिले, कुछ जरूरत के अनुसार गाँववालों ने बनाए। जैसे पशुओं को पानी पिलाने के बाद तालाब के भराव क्षेत्र के पास नहीं रुकने देते, स्नान, हाथ-मुँह, पैर व कपड़े धोना वर्जित है। आगौर क्षेत्र में पेशाब, शौच करने की सख्त मनाही है। पानी कम पड़ने लगता है, तब टेंकर भरने पर रोक लगा दी जाती है।

तालाब गाँव से बिल्कुल सटा हुआ है इसलिए हमेशा पनिहारियों की आवाजाही रहती है। रेवड़ वाले भी आगौर में घूमते रहते हैं। गाँववालों को किसी भी प्रकार के बिगाड़ की सूचना इन्हीं माध्यमों से मिल जाती है। महिलाएं अमावस्या व पूर्णिमा को तालाब के भराव क्षेत्र के आस-पास सफाई करती हैं। निर्जला ग्यारस के दिन व्रत रखती हैं। तालाब से मिट्टी निकालती हैं, भजन-भाव करती हैं।

तालाब के पानी की चमक नई पीढ़ी के चेहरों पर चमकती है, बच्चे भी समझते हैं तालाब का महत्व

पीढ़ियों की मेहनत का फल है कुम्हारकोठा तालाब

साँवराई तालाब

जल सहेली ने संभाली साँवराई तालाब की प्रबंधन व्यवस्था

जैसलमेर से लगभग साठ किलोमीटर दूर दक्षिण में स्थित अड़बाला गाँव का साँवराई तालाब आठ गाँवों की प्यास बुझाता है। गाँव के लोग बताते हैं कि साँवल सिंह नामक व्यक्ति ने कई पीढ़ियों पहले जब बस्ती बसाई, तब यह तालाब खुदवाया था इसलिए साँवराई नाम पड़ा। पालर व रेजाणी पानी की उपलब्धता से ही दूरदराज के इस क्षेत्र में जीवनोपार्जन संभव हुआ। गाँव के निवासी बताते हैं कि एक बार तालाब में पानी आ जाता है, तो एक बूंद भी धरती में नहीं जाता। इतना मजबूत है इसका तल। नीचे बिटू पत्थर है, जो पानी को रोक कर रखता है। आस पास के सतां, आला, जोधा, हापा, गेराजा, मूलिया, जानारा और अड़बाला आदि गाँव के लोग एवं मवेशी इस तालाब से प्यास बुझाते हैं। तालाब का पानी खत्म होने के बाद तल में बेरियां खिणते (खोदते) हैं। चार-पाँच फुट गहरा गड्ढा खोदने पर दिनभर में एक बेरी में पाँच सौ लीटर पानी मिल जाता है। सिर घड़ा पानी ले सकते हैं।

आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों को आज भी तालाब एवं बेरियों की जरूरत है। जल सहेली कमला देवी व शांति देवी के अनुसार, “हम लोग गरीब हैं। खेती के लिए हमारे पास जमीन नहीं के बराबर है। बकरी पालन, मनरेगा एवं खुली मजदूरी से गुजारा चलता है। घरों में पानी भंडारण के टाँके नहीं है। साल भर की जरूरत जितना पानी संग्रहण नहीं कर पाते। इसलिए तालाब व बेरियों पर निर्भरता है।”

गाँव में जल सहेली समूह बना हुआ है। इस समूह ने गाँव के मुखिया लोगों के सामने प्रस्ताव रखा कि टेंकर भरना बंद करना चाहिए ताकि पशु, जीव-जंतु व गरीब परिवार सिर घड़ा पानी ले जा सकें। अड़बाला गाँव ने सहमति जताई तथा टेंकर भरना बंद करवा दिया। इस समूह ने निगरानी रखनी शुरू की। एक दिन दोपहर में तालाब की तरफ टेंकर जाता दिखाई दिया। जल सहेली समूह की महिलाएं उसी समय तालाब पर आईं तथा टेंकर वाले को बताया कि टेंकर भरने की मनाही है। समझाने के बाद भी नहीं माना, तो उन्होंने टेंकर का पाइप पानी से बाहर निकाल कर उसे भगा दिया। इसकी सूचना गाँव वालों को मिली तो वो भी इनके समर्थन में आए।

गाँव में लोगों ने पहले कभी आगौर को सरकारी रिकॉर्ड में दर्ज कराने का सोचा नहीं। अब सोलर कंपनियों के आने और सरकार द्वारा मगरे की जमीन के आवंटन से उन्हें भी खतरा महसूस होने लगा है। इसलिए गाँव के लोग आगौर की सुरक्षा का प्रयास कर रहे हैं। जल सहेली समूह ने भी ग्राम पंचायत में काम की मांग करके, खुदाई, पाल दीवार, घाट का कार्य कराया। मनरेगा से मिट्टी निकालने का काम भी हुआ है। बिराड़ (जन सहयोग) के माध्यम से भी तालाब में विकास कार्य कराए जाते हैं। किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसकी आत्मा को शांति के लिए तालाब से मिट्टी निकालने की परंपरा है। हर साल बरसात से पूर्व लासीपा (श्रमदान) करते हैं।

अड़बाला के सांवराई तालाब में लगा स्तंभ कहता है कुनबों के बसावट व पलायन की कहानी

मरुधरा में लोगों ने पानी के लिए हाथ
फैलाए नहीं, जमीन पर जमाए

बिजलिया तालाब

घर के मटके की तरह रखते हैं तालाब को

तालाब बनने की संभावना को देखते हुए बसा था बिजलिया गाँव। समतल तल और पानी की आवक थी। तालाब गाँव के ठाकुर सरदार सिंह जी ने ओड समुदाय को पैसे देकर खुदवाया था। गाँव वालों के अनुसार तालाब के पास आसमानी बिजली गिरी थी, इसलिए तालाब व गाँव का नाम बिजलिया हो गया। कई पीढ़ियों तक तालाब ही पेयजल का मुख्य साधन रहा। इसमें पानी समाप्त होने के बाद लूणी नदी में उकेरियां (कच्ची छोटी बेरी) खोद कर वहां से पानी लाते थे। एक बेरा (कुंआ) भी था, जिससे पानी पीते थे। यदि अच्छी बरसात हो तो तालाब में एकत्रित पानी वर्ष भर चलता है। बिजलिया के अलावा सोबड़वास, छजाला, मडावला, सड़ा, मैया की ढाणी, कूकलों की ढाणी के लोग भी यहाँ से पानी ले जाते थे। बुजुर्गों ने तालाब बनाया और अच्छा प्रबंधन भी किया। प्रबंधन व्यवस्था पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही और तालाब को उपयोगी बनाए रखने वाला प्रबंधकीय ढांचा यहाँ के लोगों को विरासत में मिला। खंगारराम जी, जबर सिंह जी, राणाराम जी ने बताया कि “तालाब व पाल के अंदर वाले भाग में बुजुर्ग जूती पहन कर नहीं जाते थे। इधर से गुजरना होता था, तो जूती हाथ में लेकर जाते थे।”

तालाब में स्नान करना, शौच आदि गंदगी करना, किसी भी प्रकार का वाहन अंदर लाना, पशुओं को पानी पिला कर आगौर क्षेत्र में बिठाने, मिट्टी खोद कर ले जाने, वृक्षों को काटने व टेंकर से बाहर के गाँवों में पानी बेचने की सख्त मनाही है। साफ-सफाई के लिए गाँव की तरफ से एक व्यक्ति रखा हुआ है, जिसे जन सहयोग से मजदूरी देते हैं। धार्मिक महत्व वाली तिथियों पर श्रमदान तथा अंतिम संस्कार के बाद तालाब से मिट्टी निकाल कर पाल पर डालने की परंपरा गाँव के लोग आज भी निभाते हैं। तालाब में पानी कम पड़ने लगता है, तब गाँव वाले भी टेंकर ले जाना बंद कर देते हैं ताकि जीव-जंतुओं के लिए पानी बचा रहे। तालाब संबंधी विवाद का निपटारा गाँव के मुख्य लोग करते हैं। नियम तोड़ने वालों को दंड लगाते हैं। जरूरत के अनुसार ग्राम पंचायत भी तालाब के विकास से जुड़े कार्य करवाती है।

जल सहेली अणसीदेवी ने बताया कि “तालाब की देखभाल महिलाएं पहले से करती आई हैं। अब हमारा जल सहेली समूह बन गया, जिससे देखभाल में नियमितता आ गई। महात्मा गांधी नरेगा का काम आता है, तब सभी पूरा काम करती हैं। इस साल तालाब के विकास के लिए मजदूरी में से प्रत्येक मजदूर ने सौ-सौ रुपए एकत्रित किए हैं तथा जरूरत पड़ने पर खर्च करेंगे। हमें तालाब की जरूरत है। पाताल का पानी काफी गहरा चला गया तथा खत्म हो जाएगा। नहर का पानी नियमित नहीं आएगा। इसके विकास और प्रबंधन की परंपरा को बनाए रखेंगे, तो हमारे बच्चे भी उस परंपरा को चालू रखेंगे।”

बुजुर्गों के कहा था तालाब की देखभाल करना, संकट में काम आएगा

सहभागी प्रक्रिया से नाडी के विकास का नियोजन करते हैं गाँव के लोग

ज्येष्ठ माह की निर्जला ग्याहरस को मरुधरा की महिलाएं दिन भर जल ग्रहण नहीं करती, नाडी पर श्रमदान करती हैं

राम तलाई

समुदाय फिर से कर रहा है जीर्णोद्धार

लूणावास के लोगों का कहना है कि चार सौ वर्ष पहले लूणावास वीर बापजी राम तलाई का निर्माण बंजारों ने कराया था। बापजी की ओरण में बना यह तालाब गाँव का मुख्य जलस्रोत है। सौ बीघा ओरण ही आगौर रहा है। इस ओरण में जाल के वृक्षों की सघनता है। लोगों की टिकाऊ आजीविका का साधन खेती और पशुपालन है तथा ओरण में मुख्य तालाब के अतिरिक्त बनी छः नाडियां आजीविका का मुख्य आधार रही हैं। छः सौ घरों की बस्ती वाले इस गाँव में लगभग एक सौ पचास परिवार गाँव में तथा शेष खेतों में निवास करते हैं। दस-पंद्रह साल पहले जब ट्यूबवैल नहीं थे तब गाँव वालों के लिए राम तलाई पेयजल का मुख्य स्रोत था। सभी लोग तालाब का उपयोग करते थे। ट्यूबवैल व नर्मदा नहर से पाइप लाइन शुरू होने के बाद तालाब का पानी पीना छोड़ दिया। वर्तमान में यह तालाब केवल पशुओं को पानी पिलाने के लिए उपयोगी है।

गाँव वालों का मानना है कि भविष्य में कभी भी तालाब की जरूरत पड़ सकती है, इसलिए वो इसकी देखभाल करते हैं। तालाब से मिट्टी ले जाना सख्त मना है। केवल चुल्हा बनाने के लिए मिट्टी ले जाने की छूट है। गाँव के लोग तालाब की मिट्टी को शुद्ध मानते हैं इसलिए होलिका दहन का स्थान एवं जन्माष्टमी के दिन कानूड़ा इसी मिट्टी से बनाते हैं। तालाब, पाल व ओरण में हरे वृक्ष पर कुल्हाड़ी चलाना मना है। तालाब व आगौर में शौच गंदगी आदि करना मना है। स्नान करना, हाथ-मुँह, पैर धोना मना है। पशुओं को पानी पिलाकर पाल व भराव क्षेत्र पर रोकना व टेंकर भरना मना है। अमावस्या और पूर्णिमा के दिन गाँव के लोग श्रमदान करते हैं। साल में एक बार जागरण होता है। समदरिया हिलोरने का कार्यक्रम भी होता है।

जल सहेली पारूदेवी व पार्वती देवी के अनुसार "हमने तालाब की देखभाल के लिए जल सहेली समूह बनाया है। अमावस्या, पूर्णिमा, निर्जला ग्यारस आदि के दिन सफाई करती हैं, तालाब की मिट्टी निकालती हैं। तालाब को ठीक कराने के लिए हमने कुछ काम तय किए तथा ग्रामसभा में ग्राम पंचायत को जमा करवाया। कुछ काम स्वीकृत हुए हैं।"

ग्राम विकास अधिकारी मदन लाल राणा ने बताया कि "जल सहेली व समुदाय ने तालाब के जीर्णोद्धार को लेकर नियोजन ग्राम पंचायत में दिया तथा हमने जिला परिषद में भेजा। चौबीस लाख का प्लान स्वीकृत हुआ और तालाब का अमृत सरोवर में चयन हुआ। जल सहेली व गाँव के लोगों द्वारा सुझाए गए कार्य करवाएंगे। भामाशाहों से तालाब के सौंदर्यीकरण के लिए सहयोग लेंगे। इसे आदर्श तालाब बनाने के गाँव के सपने को पूरा करने का प्रयास करेंगे। गाँव के लोग भी तालाब को लेकर फिर से जागरुक व सक्रिय हुए हैं तथा प्रबंधन व्यवस्था बनाने की कोशिश कर रहे हैं।"

तालाब की देखरेख का बीड़ा जल सहेलियों के हाथ में है

प्रबंधन व्यवस्था की मजबूती में पुरुष भी करते हैं सहयोग

गाला नाडी

पेयजल का मुख्य स्रोत है

गालानाडी के निवासियों का मूल गाँव गादेसरा है। यह गालानाडी से दस किलोमीटर दुर है। गाँव में रहने वाले लोगों के खेत यहाँ थे। खरीफ की फसल लेने के लिए यहाँ आते थे। यहाँ पर छोटा नाडिया भी था। पानी की व्यवस्था थी, तो यहीं पर आकर गाँव बस गया। धीरे-धीरे छोटा नाडिया बड़ी नाडी बन गया। गाला रेत के धोरे को कहते हैं। गाले के पास में नाडी बनी तो नाडी और गाँव का नाम गालानाडी हो गया। इस नाडी का आगौर क्षेत्र पचीस एकड़ भूमि पर फैला है। नाडी का तल मजबूत है तथा अच्छी बरसात होने पर साल भर पानी रुकता है। आठ-दस गाँव के लोग संकट के समय पानी यहाँ से लेकर जाते हैं। आबादी बढ़ने के साथ पानी की जरूरत बढ़ी, तो गाँव के लोगों ने खुदाई कर इसकी भराव क्षमता बढ़ाई। नाडी के पास पुरानी बेरी है जिसमें रिसाव का पानी आता है। पहले इसका उपयोग करते थे लेकिन अब इस बेरी की स्थिति बेहद खराब है।

इस क्षेत्र का भू-जल खारा है तथा पीने योग्य नहीं है। मीठा पानी घरेलू स्तर पर टांकों व नाडी से ही मिलता है। पंचायत परिसीमन के कारण गालानाडी के अधिकांश परिवारों के खेत दुसरी ग्राम पंचायत में आते हैं। इस कारण से महात्मा गांधी नरेगा के टाँके नहीं बने। अतः उनकी निर्भरता नाडी पर है। यहाँ सरकारी ट्यूबवैल से पानी आता है। लेकिन पाइप लाइन से पानी की नियमित सप्लाई नहीं होती। गाँव के लोगों के कहे अनुसार ट्यूबवैल का पानी पीने लायक नहीं है, इसलिए वो उस पानी का उपयोग पशुओं को पिलाने व स्नान आदि करने के काम में लेते हैं।

गाँव के निवासी निंबाराम जी, बगदाराम जी ने बताया, “इस साल नाडी के विकास एवं प्रबंधन पर चर्चा हुई। आंबा ग्यारस के दिन श्रमदान के आयोजन का निर्णय हुआ। माइक से आह्वान किया गया तथा दो हजार लोगों ने दो दिन श्रमदान किया। ट्रेक्टर वाले ट्रोलियां लेकर आए। नाडी का कचरा एवं अनुपयोगी झाड़ियां काटकर नाडी व आगौर को साफ किया।” इतने बड़े स्तर पर समुदाय का एकत्र होकर सामूहिक रूप से श्रमदान करना गाँव के लोगों का नाडी के प्रति लगाव को दिखाता है।

जल की शुद्धता बनी रहे इसके लिए नाडी के रखरखाव से जुड़े कुछ नियम भी बने हुए हैं। नाडी में गंदगी करने, स्नान, कपड़े धोने, कचरा फैंकने व वृक्ष काटने की सख्त मनाही है। गाँव का गंदा पानी नाडी में आने से रोकने के लिए पूर्व में ग्राम पंचायत ने मिट्टी का पटड़ा बनवाया था। गाँव का पानी नाडी में नहीं आता। पानी की आवक क्षेत्र में कुछ लोगों के खेत थे। बुजुर्गों ने उसको लेकर कोर्ट में केस लड़ा। जमीन खाली कराई और गौचर के नाम से राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज कराई।

गाँव के लोगों का सपना इस नाडी को तालाब के रूप में विकसित करना है, ताकि वर्ष भर पानी मिल सके। गाँव के लोगों ने नाडी के विकास को लेकर पंचायत में कई बार प्रस्ताव दिए, लेकिन राजनीतिक कारणों से काम स्वीकृत नहीं हुए। इससे गाँव वालों का हौसला कम नहीं हुआ है। उनका कहना है कि यदि पंचायत से कार्य नहीं होगा, तो जनसहयोग से कार्य कराएंगे।

अम्बा ग्याहरस पर दो हजार लोगों ने दो दिन किया श्रमदान

डाबड़ नाडी

जितनी सुंदरता, उतनी ही मजबूत है प्रबंधन व्यवस्था

लगभग दस पीढ़ी पहले इस गाँव के पूर्वज सुल्तान सिंह जी जैसलमेर से यहाँ आए, तब उन्होंने खुदवाई थी डाबड़ नाडी। नाडी का तल मजबूत है। मिट्टी पानी नहीं सोखती इसलिए वर्षा का जितना पानी एकत्रित होता है, उतना गाँव वालों के उपयोग के लिए मिल जाता है। इस नाडी की मिट्टी में कुछ तो खास है, तभी आस-पास के गाँव वाले भी यह मिट्टी ले जाकर अपने गाँव की नाडियों को ठीक करवाते हैं। कौशलू सरपंच ठाकराराम जी ने कुछ वर्ष पूर्व रामदेवरा की नींबली नाडी में पानी रोकने की क्षमता बढ़ाने के लिए डाबड़ नाडी की मिट्टी ले जाकर नाडी तल में डलवाई थी।

डाबड़ नाडी प्रबंधन व्यवस्था की अगुवाई करने वाले प्रेम सिंह भाटी बताते हैं, "गत दस वर्षों में नाडी के विकास को लेकर समुदाय व सरकार के सहयोग से काफी कार्य हुआ है। महात्मा गांधी नरेगा, मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन आदि योजनाओं से भी कार्य कराया है। नाडी की सुंदरता की सराहना भी लोग करते हैं। वर्ष 2016 में अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने डाबड़ नाडी की प्रबंधन व्यवस्था देखकर गाँव वालों को धन्यवाद दिया। दूसरे गाँव के लोग आते हैं, विकास और प्रबंधन व्यवस्था को देखते हैं तथा अपने गाँव के जल स्रोतों को ठीक कराने की प्रेरणा लेकर जाते हैं।"

नाडी के पानी का उपयोग गाँव के लोग ही करते हैं। विवाह, मृत्यु या अन्य सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रम के लिए जरूरत पड़ती है, तो दूसरे गाँव के लोगों को भी पानी ले जाने दिया जाता है। गाँव के लोग प्रतिवर्ष मानसून आने से पूर्व श्रमदान कर नाडी व आगौर को साफ करते हैं। नाडी की देखभाल के लिए व्यक्ति रखते हैं। यहाँ पहले प्रति परिवार निर्धारित मात्रा में बाजरा एकत्रित करते थे तथा नाडी की देखरेख करने के लिए रखे गए व्यक्ति को देते थे। बाद में जनसहयोग से राशि एकत्रित कर मजदुरी देने का प्रचलन प्रारंभ हुआ। देखरेख करने वाला आगौर की सफाई, गोबर कचरा एकत्रित करने, टेंकर भरने वालों की निगरानी का काम करता है, नाडी को साफ-सुथरी रखता है और प्रबंधन के नियम तोड़ने पर गाँव वालों को सूचना करता है। निगरानी के लिए अनौपचारिक कमेटी बनी हुई है, जिसमें सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व है। जरूरत पड़ने पर कमेटी बैठक कर निर्णय करती है तथा उसे लागू कराती है। टेंकर भरने वालों से प्रति टेंकर सौ रुपए वसूलते हैं।

पंचायत ने नाडी के विकास कार्य में पाल पर पत्थर पिचिंग व घाट पर पत्थरों का रैंप बनाया है, जो आज उपयोगी नहीं है। गाँव के कुछ लोगों की शिकायत है कि पंचायत गाँव की सहभागिता से कार्य नहीं कराती। विकास कार्य में जितनी राशि खर्च होती है, उस हिसाब से कार्य समुदाय के लिए महत्वपूर्ण साबित नहीं होते हैं। पाल पर सूखे पत्थर की पीचिंग का कार्य हुआ, उससे नाडी की मजबूती पर कोई फर्क नहीं पड़ा। पत्थरों की बीच की जगह में झाड़ियां व घास उग आई है जिसकी कटाई भी नहीं हो पाती है। घाट पर बने रैंप को लेकर समुदाय की शिकायत है कि वह इतना उबड़-खाबड़ बना

है कि पशु नहीं चल पाते। गाँव वालों ने गलत तरीके से हो रहे कार्य का विरोध किया, लेकिन पंचायत व कुछ लोग साथ मिले हुए थे, इसलिए उनकी बात नहीं सुनी। इसको लेकर प्रेम सिंह भाटी का मानना है कि "सरकारी तौर पर होने वाले कार्य लोगों की भागीदारी से हो तथा बुजुर्गों की तरह प्रबंधन व्यवस्था बनाएं तो ठीक रहेगा। नाडी भविष्य में हमारे ही काम आएगी।"

जीवन का सफर जल स्रोत से शुरू होकर यहीं खत्म होता है, जीवन-परण-मरण के संस्कार जल स्रोत पर होते हैं।

बिलासर नाडी की सुरक्षा व संरक्षण की निगरानी रखते हैं चरवाहे

बिलासर नाडी

जल सहेली ने संभाली प्रबंधन व्यवस्था

बाड़मेर जिले के बिलासर गाँव में स्थित बिलासर नाडी की खुदाई लगभग ढाई सौ साल पहले बिलोजी राजपुरोहित ने करवाई थी। खुदाई के काम में सभी समुदायों ने अपना सहयोग दिया। लोग पीने के पानी के लिए बरसात पर निर्भर हैं, इसलिए बिलासर नाडी पेयजल संरक्षण की दृष्टि से समुदाय के लिए अहम स्थान रखती है। पानी की शुद्धता बनी रहे इसलिए गाँव वाले मिलकर हर बरसात से पहले तालाब की सफाई करते हैं। लोग बताते हैं कि उनके गाँव में पाइप लाइन और नल आए हुए काफी समय हो गया लेकिन पानी अभी तक नहीं आया। उनका मानना है कि सरकारी सिस्टम एक समय सीमा तक काम करेगा, लेकिन नाडी यहाँ ढाई सौ सालों से है और आगे भी हजारों सालों तक रहेगी। इसलिए वे इस नाडी का खयाल रखते हैं।

गाँव वालों के अनुसार इस नाडी की आगौर पूरी तरह अतिक्रमण मुक्त है लेकिन बीच से दो सड़क गुजरने के कारण साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। पहले सात गाँवों के लोग मिलकर अनाज इकट्ठा करते थे और इस नाडी के आगौर के रखरखाव के लिए एक आदमी रखते थे ताकि पानी की शुद्धता बनी रहे। यह परंपरा पिछले कुछ सालों से बंद है। लोग पहले की तरह सामूहिकता के साथ नाडी का ध्यान भी नहीं रख रहे हैं। फिर भी बिलासर गाँव के लोगों का इस नाडी के प्रति लगाव पहले की तरह ही बना हुआ है। पहले लोग पखाल और ऊंट के माध्यम से गाँव से तीस किलोमीटर दुर तक पीने का पानी ले जाया करते थे और सभी लोग अमावस्या, पूर्णिमा और एकादशी के दिन इकट्ठा होकर नाडी की सफाई किया करते थे। श्रमदान अब इस गाँव तक सीमित हो गया है। इस नाडी से पीने के लिए पानी को ले जाने से किसी को मना नहीं किया जाता लेकिन यदि यह पता चलता है कि कोई यहाँ से पानी का टेंकर भरकर ले जाकर बाहर बेचता है तो उसका नाडी से पानी ले जाना बंद करवा दिया जाता है।

समुदाय के साथ बिलासर ग्राम पंचायत भी नाडी से जुड़े विकास कार्यों को करवाती है। पंचायत ने यहाँ पाल पर पत्थर पिचिंग और एक मजबूत दीवार के निर्माण का काम करवाया। नाडी की पाल पर पत्थरों की बिछाई के काम को लेकर समुदाय के सभी लोग संतुष्ट नहीं हुए क्योंकि बारिश के कारण तालाब के पाल की मिट्टी नीचे से खिसक गई और पत्थर भी कई जगह से खिसक गए। पाल में कई बड़े गड्ढे और दरारें पड़ गई। गाँव के बुजुर्गों के अनुसार इस कमी के लिए गाँव के लोग भी उत्तरदायी हैं क्योंकि उन्होने नाडी के विकास कार्यों में कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। उन्होंने पंचायत की नियत पर नहीं अपितु उनकी समझ पर सवाल खड़े किए।

गाँव में नाडी को लेकर किसी भी औपचारिक या अनौपचारिक कमेटी का गठन नहीं हो रखा था। गाँव के प्रभावशाली लोग ही इस नाडी से जुड़े फैसले लिया करते थे। लेकिन उन्नति संस्था ने यहाँ महिलाओं का 'जल सहेली' नाम से एक समूह बनाया जोकि तालाब के प्रबंधन में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करता है। जल सहेली गेरो देवी के अनुसार "नाडी से जुड़े हुए ज्यादातर निर्णय पुरुष करते हैं। लेकिन इस नाडी की देखरेख और उपयोग सबसे ज्यादा हम करती हैं, इस हिसाब से इस नाडी पर पहला हक तो हमारा हुआ।"

महिलाओं का मानना है कि पहले के बुजुर्ग नाडी की देखभाल अच्छे से करते थे। अब वे उन्हीं की तरह इस नाडी की देखभाल करने का प्रयास कर रही हैं। महिलाओं का पानी को लेकर इस तरह से संगठित होकर तालाब के प्रबंधन में अपनी भागीदारी को सुनिश्चित होना सराहनीय है।

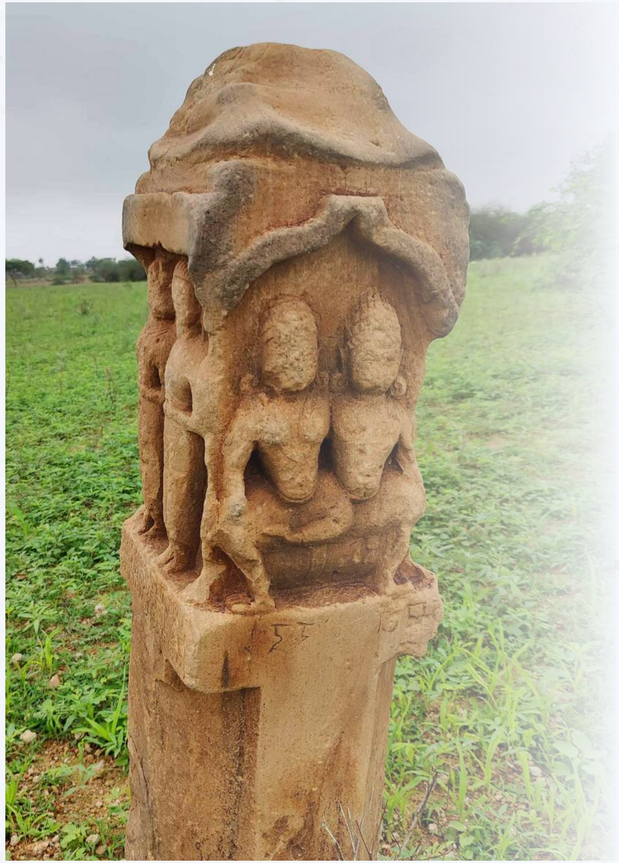

गौवर्धन :

गौवर्धन तालाब के इतिहास एवं अस्तित्व का प्रतीक है। जिसकी स्थापना प्राचीन समय में तालाब का निर्माण कार्य पूरा होने के बाद प्राण-प्रतिष्ठा के लिए की जाती है।

वन्य जीवों की शरणस्थली, पनिहारियों की हथाई, चरवाहों की चहल-पहल रमणीक बना देती है बिलासर नाडी को

सिरलाई नाडी के कारण गांव में कभी पानी का संकट नहीं होगा, यह भरोसा है समुदाय को

सिरलाई तालाब

इकतीस नाडी-तालाब को उपयोगी बनाए हुए हैं डंडाली के लोग

वर्षा जल संग्रहण की अनूठी मिसाल है डंडाली ग्राम पंचायत। पंचायत की अलग-अलग ढाणियों, चारागाहों में कुल इकतीस नाडी-तालाब हैं जिनका उपयोग पेयजल एवं पशुओं के लिए किया जाता है। डंडाली सरपंच गुलाब सिंह जी एवं उनके साथ जुड़े लोगों ने बताया कि गाँव के मुख्य जल स्रोत सिरलाई तालाब का निर्माण आठ सौ वर्ष पहले सिरला जी राजपुरोहित ने जन सहयोग से करवाया था। गाँव के पास गोयला पहाड़ी श्रृंखला से बरसाती पानी बह कर मैदान में आता है तथा इसे संग्रहण कर उपयोग करने के लिए समुदाय ने इकतीस नाडियों का निर्माण किया तथा प्रबंधन व्यवस्था बनाई जिसके कारण ये आज भी उपयोगी हैं। गाँव में बीस पुराने जल स्रोत हैं तथा ग्यारह नए बनाए गए हैं। पानी की जरूरत और आवक को ध्यान में रखते हुए नए तालाब बनाए हैं तथा उपयोगकर्ता इनके प्रबंधन की व्यवस्था करते हैं। साल 2021 में ही पाँच नए तालाब बनाए गए। सीएसआर और जनसहयोग के माध्यम से डेढ़ करोड़ का अनुदान इकट्ठा कर पाँच नए और तीन पुराने तालाबों पर विकास कार्य किए गए।

सिरलाई तालाब का पानी गाँव के लोग पीने के लिए उपयोग में लेते हैं। इसलिए इस तालाब का विशेष ध्यान रखा जाता है। ग्राम पंचायत ने इस तालाब का सीमाज्ञान करवाकर पूरे आगौर क्षेत्र की तारबंदी करवाई ताकि सुरक्षा और जल की स्वच्छता दोनों को एक साथ सुनिश्चित किया जा सके। तारबंदी के किनारे-किनारे खाई की खुदाई कराई जिससे बाहर का गंदा पानी अंदर न आ सके और पशु भी तालाब की आगौर के अंदर न घुसे। तालाब में आवागमन के लिए दो गेट लगाए गए हैं। एक सुंदर घाट है जिसके आस-पास वृक्षारोपण किया गया है। इस तालाब का भराव क्षेत्र लगभग चार हेक्टेयर है जबकि आगौर का कुल क्षेत्रफल छियालीस हेक्टेयर है। हर साल तीन सौ रुपए प्रति घर के हिसाब से जनसहयोग इकट्ठा किया जाता है और तालाब के मरम्मत का काम किया जाता है। गाँव वाले पानी को लेकर पूरी तरह आत्मनिर्भर हैं।

इस गाँव के पास से ही लूणी नदी बहती है लेकिन उसमें पानी हर साल नहीं आता। नदी में पीने के पानी के लिए बेरियां भी बनाई गई थीं लेकिन उनकी हालत खराब है। नदी में गंदा पानी आने के कारण बेरियों का पानी पीने लायक नहीं रहा। गाँव में पानी की सप्लाई के लिए एक टंकी बनी हुई है लेकिन उसमें आज तक पानी नहीं आया। गाँव के लोगों को पानी की पूर्ति के लिए सरकार पर भरोसा नहीं है।

इस तालाब से जुड़ी लोक मान्यता है कि यदि किसी बुजुर्ग व्यक्ति का प्राण नहीं निकल रहा हो और वो काफी पीड़ा में हो, तो घर के किसी सदस्य द्वारा एकादशी और पूर्णिमा के दिन एक

चौकड़ी मिट्टी डालने की मन्नत मांगने से उस व्यक्ति के प्राण बिना पीड़ा के निकल जाते हैं और उसे मुक्ति मिल जाती है। इस तरह की धार्मिक मान्यताएँ समुदाय का इस तालाब से जुड़ाव दिखाती हैं और तालाब की पवित्रता और प्रबंधन व्यवस्था को भी बनाए रखने में सहायक हैं।

गाँव की सोच केवल इस तालाब के प्रबंधन तक सीमित नहीं है। गाँव वाले गोयला पहाड़ से आने वाले पानी को पहाड़ पर ही रोकना चाहते हैं। गोयला पहाड़ नौ हजार बीघा जमीन पर फैला हुआ है। वहाँ से हर साल लाखों गैलन लीटर पानी बहकर बेकार चला जाता है। वो इस पहाड़ पर एक छोटा बांध बनवाना चाहते हैं। पंचायत का मानना है कि इस बांध के माध्यम से आस-पास के बीस गाँवों को पानी की पूर्ति की जा सकती है। इस परियोजना के लिए पंचायत ने राज्य सरकार को भी प्रस्ताव लिखकर भिजवाया है ।

इन तालाबों के रखरखाव के लिए महिलाओं का जल सहेली समूह है। जो बेहद सक्रियता के साथ तालाबों के संरक्षण में अपना योगदान देता है। पिछले तीन सालों में जल सहेली समूह ने तालाबों के विकास से जुड़े सत्ताईस प्रस्ताव पंचायत में दिए जिनमें से ज़्यादातर स्वीकृत हुए। जल संरक्षण से जुड़ा एक ऐसा ही प्रस्ताव लूणी नदी के किनारे एक नाडी की खुदाई को लेकर था जिसे सरपंच गुलाब सिंह पुरोहित ने स्वीकार किया और एक नाडी की खुदाई करवाई और उसका नामकरण महादेव नाडी के रूप में किया। इस नाडी के बनने से आस-पास के पशुपालकों को काफी मदद मिली। अभी तक जो पानी बहकर लूणी नदी में जाता था, वो पशुओं के पीने के लिए काम आ रहा है।

इकतीस जल स्रोतों की सुचारू प्रबंधन व्यवस्था है डंडाली गाँव में

इकडाणी तालाब

पीढ़ी दर पीढ़ी प्रबंधन व्यवस्था कायम होने के कारण सात सौ सालों से अडिग है इकडाणी नाडी

सात पीढियों से चली आ रही समुदाय की प्रबंधन व्यवस्था

इकडाणी तालाब की खुदाई गाँव के पूर्वजों ने सात सौ वर्ष पूर्व इकडाणी गाँव को बसाने के दौरान करवाई थी। उस समय आदमपुरा-इकडाणी एक ही गाँव था। गाँव में लोग कम थे इसलिए छोटा तालाब बनाया गया था। जैसे-जैसे लोग बढ़ते गए, तालाब का आकार भी बढ़ा। समुदाय ने उस समय की जरूरत के अनुसार प्रबंधन के नियम बनाए और पीढ़ी दर पीढ़ी जरूरत के अनुसार नियमों में बदलाव भी किया गया। पहले मटके से पानी ले जाते थे, बाद में ऊंट, बैल की पखाल, टंकी से ले जाने लगे। वर्तमान पीढ़ी तक आते-आते ट्रेक्टर टेंकर से पानी ले जाने की व्यवस्था आ गई।

गाँव वाले पीने के पानी के लिए आज भी इस तालाब पर निर्भर हैं। पिछले साल बारिश अच्छी नहीं हुई थी, इसलिए तालाब में पानी कम इकट्ठा हुआ और समय से पहले खत्म हो गया। गाँव के लोगों ने जनसहयोग से तालाब की मिट्टी निकालकर भराव क्षमता को बढ़ाने का निर्णय लिया। दोनों गाँवों की चार सौ घरों की बस्ती है। प्रति परिवार पाँच सौ रुपए का जन सहयोग एकत्रित किया गया। किसी गरीब के पास पैसे नहीं हुए, तो उसने बदले में मिट्टी निकाली। एक स्वयंसेवी संस्था ने डेढ़ लाख रुपए दिए। इस तरह तीन लाख रुपए इकट्ठे किए गए। इन रुपयों से तालाब से मिट्टी निकालने और आगौर में साफ-सफाई का काम किया गया। लोगों को बारिश ने निराश नहीं किया और इस साल अच्छी बरसात हुई। तालाब पूरी तरह भर गया। गाँव के लोग इस बात को लेकर पूरी तरह आश्वस्त थे कि अब उन्हें साल भर पानी मिलेगा।

तालाब की प्रबंधन व्यवस्था चलाने के लिए दोनों गाँवों के नेतृत्वशाली लोगों की अनौपचारिक समिति है। तालाब से जुड़ा हुआ कोई निर्णय लेना होता है, तो यह समिति बैठक करती है। दोनों गाँवों में जल सहेली हैं जो प्रबंधन व्यवस्था चलाने में समिति की मदद करती हैं। समिति ने तालाब से पानी ले जाने के लिए चार टेंकर तय कर रखे हैं। जो भी टेंकर वाला पानी वितरण के लिए तैयार होता है, वह समिति को आवेदन करता है। तय नियमों के अनुसार उसे अनुमति दी जाती है। समिति टेंकर वालों से दस हजार रुपए की अग्रिम राशि जमा करवाती है। समिति के पास अभी चार टेंकर के चालीस हजार रुपए जमा है। जो टेंकर वाला तालाब की प्रबंधन व्यवस्था से जुड़े नियमों को तोड़ता है, उसकी अग्रिम राशि जब्त कर ली जाती है। टेंकर से पानी ले जाना बंद करवा दिया जाता है। तालाब से टेंकर के माध्यम से पानी वितरण केवल इकडाणी व आदमपुरा की सीमा में किया जा सकता है। इन दोनों गाँवों की सीमा से बाहर पानी वितरित करना बिल्कुल मना है। समिति द्वारा तालाब से पानी वितरित करने के लिए टेंकर की दरें भी दूरी के अनुसार तय की गई है और गाँव के सभी परिवारों को इसकी जानकारी है।

गाँव का हरेक व्यक्ति तालाब की निगरानी करता है। चरवाहे व टेंकर वाले भी सूचना देते रहते हैं। आगौर में पेशाब, शौच करने, पाल-घाट पर बैठकर शराब पीने, आगौर से मिट्टी खोद कर ले जाने, पशुओं को पानी पिलाकर भराव क्षेत्र में खड़ा करने पर ग्यारह सौ रुपए का दंड है। आगौर और आगौर में बने दो नाडे व तालाब राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज हैं। आगौर के चारों तरफ खाई करवा रखी है। आगौर में किसी प्रकार का बिगाड़ करना मना है। नियम सब पर एक जैसे लागू हैं। इसलिए नियम चल रहे हैं।

जल सहेली खम्मादेवी बताती हैं, “हमारा गाँव तीन किलोमीटर दूर है। अमावस्या व पूर्णिमा के दिन महिलाओं

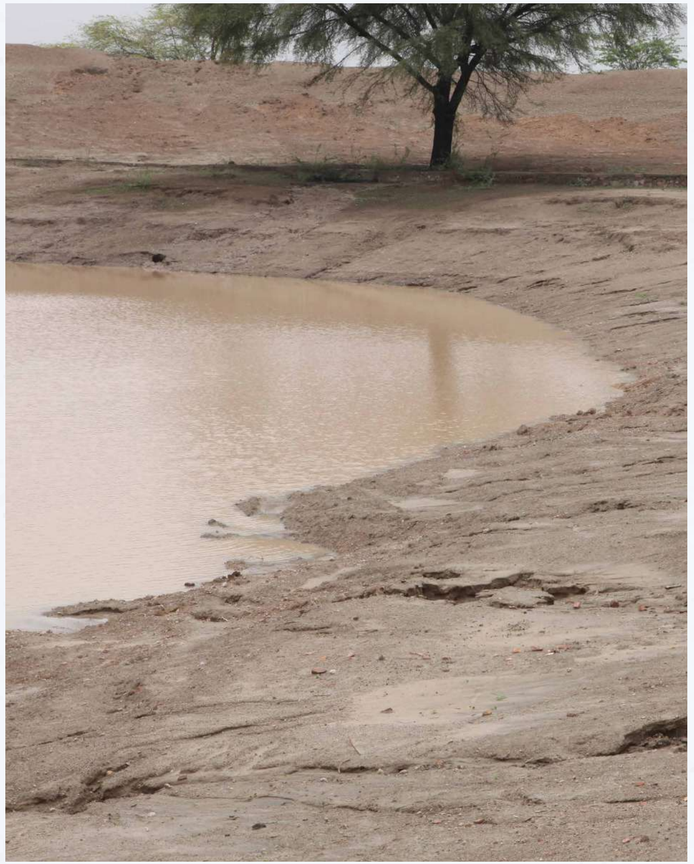

को प्रेरित कर तालाब की सफाई करने आती हैं। पूरा दिन काम करते हैं। हम पानी पीते हैं, इसलिए साफ करना जरूरी है। हम समदरिया इसी तालाब में हिलोरते हैं। नई बहुएं ज्येष्ठ महीने में तीन सौ साठ तगारी मिट्टी निकालती हैं, उसके बाद पानी पीने की हकदार होती हैं।"

गाँव में किसी भी नए सदस्य का तीन सौ साठ तगारी मिट्टी निकालने के बाद ही तालाब से पानी पीने के लिए हकदार माना जाना तालाब से समुदाय के जुड़ाव और उनके दायित्वों की समझ को दिखाता है।

जन सहयोग से नाडी को उपयोगी बनाए हुए है, इकडाणी के लोग, मजबूत प्रबंधन व्यवस्था की मिसाल है इकडाणी नाडी

चिला नाडी

नाडी और बेरियों के संगम से बारह महीने पानी उपलब्ध होता है चिला नाडी से

साल भर पानी मिलता है चिला नाडी व बेरियों से

पाटोदी से दस किलोमीटर दूर उत्तर-पश्चिम में स्थित गाँव चिलानाडी की बसावट भी वर्षा जल संग्रहण की संभावनाओं से संभव हुई। रेत के धोरों के बीच में सपाट तल का चयन जल स्रोत निर्माण के लिए किया गया और नाडी बनाई गई। गाँव बसा और गाँव की पहचान भी नाडी के साथ जुड़ गई। नाडी से पानी की उपलब्धता सात-आठ माह की हुई। बेरा खोदने का प्रयास किया गया, तो बेरी की संभावना प्रकट हुई। तालाब के अंदर बेरियां बनाई गईं और साल भर के लिए पानी की व्यवस्था को सुनिश्चित किया गया। रेत के ऊंचे टीलों के बीच बूंद-बूंद बटोर कर जीवन की बुनियाद बन गई चिला नाडी।

जल सहेली गीतादेवी, चुन्नीदेवी, लीलादेवी, मोकीदेवी, हाऊदेवी ने नाडी के इतिहास, प्रबंधन की परंपराओं, वर्तमान स्थिति और भावी जरूरत पर संवाद में बताया, “पूर्वजों की बनाई हुई यह नाडी काफी पुरानी है। हमारे दादा-दादी यहाँ से पानी ले जाते थे। पाँच-छः महीने नाडी से, उसके बाद बेरियों से। सिर घड़ा, पखाल, ऊंट गाड़ा टंकी से पानी ले जाने की व्यवस्था तक नाडी पर लोगों का पगफेरा (आवागमन) रहता था। पंद्रह-बीस सालों में टेंकर से पानी प्राप्त करने की व्यवस्था से समुदाय का नाडी से दुराव हो गया। पानी ले जाने के साधन बदले, पर नाडी व बेरियों में कोई बदलाव नहीं आया।”

जल भराव की क्षमता बढ़ाने के लिए नाडी को गहरा किया गया जिससे तल कमजोर हो गया। अब तालाब में पानी कम रुकता है, लेकिन गाँव वालों को बेरियों से पहले जितना पानी मिल जाता है। आज भी नाडी से हर वर्ष मिट्टी निकाली जाती है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि नाडी के तल को और अधिक नुकसान न पहुंचे। पीने के पानी के लिए तीन बेरियां उपयोग में हैं। गाँव वाले रोजाना पंद्रह-बीस टेंकर पानी बेरियों से लेकर जाते हैं।

बेरियों के पानी का उपयोग चिलानाडी तथा इससे अलग हुई ग्राम पंचायतों के लोग करते हैं। भगवानपुरा, हड्मतनगर, सुरजबेरा आदि गाँव के लोग भी इन बेरियों का पानी पीते हैं। गाँव के लोग आज भी पूर्वजों के बनाए नियमों की पालना करते हैं और कराते हैं। नाडी के आगौर में गंदगी करना, स्नान व कपड़े धोना मना है। आगौर से वृक्ष काटना व मिट्टी खोदकर ले जाना मना है। यदि आगौर व तालाब के पास कोई पशु मर जाता है, तो गाँव के लोग उसे तुरंत बाहर डलवाते हैं। कोई आगौर में किसी भी प्रकार का बिगाड़ नहीं कर सकता। गाँव के लोग पशु-पक्षियों के लिए भी नाडी के अस्तित्व का महत्व समझते हैं इसलिए नाडी से टेंकर भरने की मनाही है ताकि नाडी में पानी अधिक दिनों तक रुक सके। हर साल बेरियों से भी मिट्टी निकाली जाती है।

गाँव में नहर की पाइप लाइन घर-घर पहुँच चुकी है। घर-घर नल लगाने की बात हो रही है। लेकिन गाँववालों का मानना है कि नल में पानी आएगा, तब भी नाडी व बेरियों की जरूरत रहेगी क्योंकि यह जल का भरोसेमंद स्रोत है। नहर बंदी के दौरान बेरियों से ही पानी मिला था।

नाडी, पाल, आगौर की सुरक्षा करती हैं

गांव की जल सहेली

सांगरा नाडी

जीव-जंतुओं के लिए पानी सुरक्षित रखते हैं सांगरानाडी के लोग, टेंकर से पानी भरने पर रोक है

सांगरा नाडी को बचा कर रखेंगे

भोमिया जी के ओरण की चालीस बीघा भूमि है और इसी में बनी है सांगरा नाडी। सात सौ वर्ष पहले यहाँ ताल था। लोग ढाणियों में रहते थे। गाँव के लोगों के अनुसार उनके पूर्वजों ने भोमिया जी के ओरण में सांग सिंह भोमिया जी का मंदिर बनवाया था। उसके बाद ताल में नाडी बनाई, इसलिए नाडी का नाम सांगरा नाडी पड़ा। भोमिया जी का मंदिर पास होने के कारण इसे भोमिया नाडा भी कहते हैं। पहले छोटी नाडी थी। हर साल खुदाई के साथ यह नाडा बन गया।

इस क्षेत्र में पानी का बहुत संकट था। यहाँ भू-जल अत्यधिक लवणीय होने के कारण पीने योग्य नहीं है। नाडे-तालाब ही पेयजल के मुख्य स्रोत थे। जहाँ पर पक्का तल दिखता, लोग वहीं पर नाडा-तालाब बनाते और पानी की व्यवस्था करते थे। गाँव में कुछ जगहों पर बेरियां भी हैं। मसों की बेरी में बारहोमास पानी मिलता है। तालाब में पानी समाप्त होने के बाद लोग बेरियों से पानी लाते थे। गाँव में पानी कम था, इस कारण लोग पानी का उपयोग भी सावधानी से करते थे। पानी को बचाकर रखना पड़ता था। स्नान व कपड़े धोने में बहुत कम पानी उपयोग किया जाता था। सांगरा नाडी में भी बरसात होने पर पाँच-छः माह पानी मिलता था। गाँव की महिलाएं सिर घड़ा पानी ले जाती थीं। बाद के समय में घरों में वर्षा जल संग्रहण वाले टाँके बनने तथा सरकार द्वारा पाइप लाइन से पानी सप्लाई शुरू करने के कारण नाडी पर निर्भरता कम हो गई। गाँव के निवासी घेवर राम जी ने बताया कि, “सांगरा नाडी में पहले वर्षा होने के बाद दीपावली तक पानी रहता था। साल दर साल खुदाई के कारण तल में पानी रोकने वाली कठोर परत टूट गई। अब पानी दो माह रुकता है। अब पीने के लिए नहीं ले जाते।”

सीमांकन के बाद यह नाडी ग्राम पंचायत सुल्ताननगर में है। सरकारी कार्यक्रमों और योजनाओं के माध्यम से जीर्णोद्धार का कार्य सुल्ताननगर की ग्राम पंचायत करती है लेकिन नाडी का उपयोग व देखभाल सांगरा नाडी गाँव के लोग करते हैं। गाँव के लोग अभी तक बुजुर्गों द्वारा बनाए गए प्रबंधन के कायदों को मान रहे हैं और लागू कर रहे हैं। वर्ष में एक बार श्रमदान करते हैं।

सांगरा नाडी में टेंकर से पानी भरने पर रोक है। गाँव के लोग जीव-जंतुओं व पशुओं के पीने के लिए पानी को सुरक्षित रखते हैं। इंसान तो कहीं से भी पानी का जुगाड़ कर लेगा, लेकिन जीव-जंतुओं के लिए भी व्यवस्था करनी है। आगौर क्षेत्र में कोई गंदगी नहीं कर सकता। स्नान करना, हाथ-मुँह, पैर धोना मना है। पशुओं को पानी पिलाने के बाद आगौर क्षेत्र में बिठाना मना है। तालाब से मिट्टी खोद कर ले जाना मना है। घर में चूल्हा बनाने या आगंन चौक लिपाई के लिए तगारी से मिट्टी ले जाने की छूट है।

गाँव में हर मानसून से पहले निर्जला ग्यारस के दिन प्रत्येक घर से कोई एक सदस्य श्रमदान के लिए जरूर आता है। लोग नाडी व आगौर को बुहार कर साफ करते हैं, मिट्टी निकालते हैं। कुछ समय के लिए नाडी से समुदाय का जुड़ाव कुछ कम हुआ था, लेकिन लोग अब वापस ध्यान देने लगे हैं। गाँव में नहर से पाइप लाइन बिछाने का कार्य चल रहा है। आने वाले समय में घर-घर नल से जुड़ जाएगा और गाँव के लोगों को पानी की व्यवस्था होने की संभावना है। लेकिन पिछले साल जब नहरबंदी के कारण लोगों को पानी के संकट का आभास हुआ तब से उनमें नाडी को बचाए रखने की समझ बनी है।

गाँव में महिलाओं का समूह (जल सहेली) है। उन्होंने पंचायत को नाडी के जीर्णोद्धार का प्रस्ताव दिया है। कुछ कार्य हुए भी हैं। महिलाओं के जुड़ाव के बाद युवा पीढ़ी का भी जुड़ाव दिखने लगा है।

जल सहेलियों ने संभाली सांगरा नाड़ी की प्रबंधन व्यवस्था

निर्जला ग्याहरस को श्रमदान में दो गांवों के लोग आते हैं, नाडी की सफाई करते हैं।

गाँवई नाडी

गांवई नाडी और बेरी के मीठे जल के कारण ही गांव नाम सिमरखिया मीठा पड़ा है

पानी को लेकर आत्मनिर्भर है सिमरखिया गाँव

जिस गाँव की पहचान जल स्रोत के जुड़ी हो, वहाँ प्राकृतिक वातावरण जीवंत होगा ही। दो जल स्रोत हैं गाँव में - गाँवई नाडी और सतीमाता तालाब। दोनों तालाब के बीच फासला केवल एक पाल का है। इन जल स्रोतों और सतीमाता तालाब के अंदर विशाल बड़-पीपल के पेड़ों के साथ सिमरखिया गाँव की पहचान जुड़ी है। लोग पूछते हैं, सिमरखिया कौन-सा? तो उत्तर मिलता है, बड़-पीपल वाला। बहुत साल पहले गाँव के बुजुर्गों ने ये वृक्ष लगाए थे। इस साल बरसात के कारण एक पीपल का पेड़ गिर गया, तो गाँव के लोगों को बहुत अफसोस हुआ। ऐसा लगा, जैसे परिवार का कोई सदस्य चला गया। गाँव के दो तालाबों से आज भी दस-बारह गाँव के लोग पानी पीते हैं। गाँव में तालाबों का मीठा पानी है, इसलिए लोग इस गाँव को सिमरखिया मीठा भी कहते हैं।

सिमरखिया गाँव के लोग पहले दो किलोमीटर दूर भाखरी (छोटी पहाड़ी) के पास रहते थे। पुराने लोग गाँव बसाने से पहले स्थान को देखते थे। स्थान कितना बसावट के अनुकूल है, जल स्रोत बनने की क्या संभावना है आदि देख कर गाँव बसाते थे। आज जहाँ गाँव बसा हुआ है, भाखरी का पानी यहाँ आता था। बुजुर्गों ने तालाब खुदवाया तथा पानी की व्यवस्था होने के कारण यहीं पर बस गए । इस तरह सिमरखिया तालाब अस्तित्व में आया।

तालाब में पानी की आवक दो किलोमीटर दूर सतीमाता ओरण की भाखरी से है। कुछ पानी माडपुरा के मगरे से भी आता है। पानी आवक वाले क्षेत्र में गंदगी करने, कचरा डालने की सख्त पाबंदी है। गाँव वालों ने मृत पशुओं को डालने के लिए अलग स्थान आगौर से बाहर निर्धारित किया हुआ है। यदि आगौर में कोई पशु मर जाता है, तो गाँव के लोग उसे बाहर डलवाते हैं। वहां पर बसी ढाणियों के लोग इसकी देखभाल करते हैं।

कुछ समय पहले आस-पास के गाँव व ढाणियों वाले भाखरी से पत्थर खोद कर ले जाने लगे थे। गाँव वालों का मानना था कि पानी की आवक रुक जाएगी, इसलिए उन्होंने एक साथ मिलकर इस पर प्रतिबंध लगा दिया। पानी आवक वाला क्षेत्र राजस्व रिकॉर्ड में गौचर के नाम से दर्ज है। लेकिन गाँव के लोग इसे ओरण मानते हैं। यहाँ हरे वृक्ष काटना मना है। चरवाहे पशु चराते हैं, लेकिन वृक्षों की टहनियां नहीं काट सकते। आगौर के साथ-साथ तालाब को साफ-सुथरा बनाए रखने के भी नियम हैं, जो सभी को मानने पड़ते हैं।

तालाब के पास से हाइवे गुजरता है। हाइवे पर चलने वाले गंदगी नहीं करें, इसके लिए तालाब भराव क्षेत्र तक दीवार बनाई है। पास में ग्राम पंचायत कार्यालय है जहाँ कुछ बुजुर्ग दिनभर बैठे रहते हैं तथा तालाब और आगौर क्षेत्र में साफ-सफाई और अन्य महत्वपूर्ण नियमों की पालना का ध्यान रखते हैं। यदि कोई गाड़ी हाइवे पर रुकती है, तो लोग उसे तालाब की तरफ जाने से मना करते हैं। भाद्रपद में रामदेवरा जाने वाले यात्री गुजरते हैं, तब भी लोग नियमों का विशेष ध्यान रखते हैं और उनको स्नान आदि करने से रोकते हैं। तालाब के आस-पास दिन भर चहल-पहल रहती है, इसलिए देखभाल होती रहती है। यदि गाँव में बारात या कोई सामाजिक कार्यक्रम होता है, तब भी उनको घर जाकर तालाब के नियमों की जानकारी दी जाती है।

पानी के मामले में सिमरखिया गाँव आज अपने पैरों पर खड़ा है। जब तालाब का पानी समाप्त हो जाता है, तो बेरियों से पानी मिल जाता है। लोग पहले तालाब में बेरियां खोदते थे। गाँव वालों के अनुसार इस तालाब में तीस-चालीस बेरियां थीं। इस साल गर्मी के मौसम में नहरबंदी के दौरान आस-पास के गाँवों में पानी का बहुत बड़ा संकट था, लेकिन सिमरखिया न सिर्फ अपने बाशिंदों की बल्कि आस-पास के गाँवों की भी प्यास मिटा रहा था।

गांवई नाडी की प्रबंधन व्यवस्था के लिए सर्वसमाज एक है

भँवरला नाडा

रेत के टीलों की बीच तालाब पूर्वजों के जल संग्रहण ज्ञान से संभव हुआ है

साठ लाख रुपए मूल्य का पानी हर साल देते हैं दुर्गापुरा के जल स्रोत

दुर्गापुरा में तीन नाडे हैं, लेकिन मुख्य भँवरला नाडा है, जिससे गाँव के लोग पीढ़ियों से अपनी प्यास बुझा रहे हैं। पिछोला नाडा ढाणियों के बीच में है तथा रतड़ी नाडी भँवरला नाडा की पाल के पीछे है। रतड़ी नाडी पशुओं व जीव जंतुओं के पीने के लिए है। यह नाडा कब व कैसे बना इसके बारे में गाँव के अनुभवी श्री डूंगरराम जी व संवाद में शामिल मोहनराम जी ने बताया, "यह नाडा राठौड़ी (सामंती व्यवस्था) में खुदा था। उस समय गाँव के जागीरदार तय करते तथा लोग श्रमदान कर तालाब बनाते थे। भँवरला नाडा भी ऐसे ही बना। बाद में साल दर साल खुदाई से इसका आकार बढ़ता गया तथा आज बड़ा नाडा बन गया।"

अच्छी बरसात होने पर भँवरला नाडा में वर्ष भर पानी रहता है। इसका तल मजबूत है। इस कारण जमीन पानी नहीं सोखती। इस नाडे की गहराई दस-बारह मीटर व फैलाव पाँच सौ मीटर के लगभग है। गाँव वालों के कहे अनुसार पहले यहाँ बालेसर से एक नदी आती थी। उसका पानी तालाब में आता था तथा माडपुरा की घोर नाडी भरते हुए वो लूणी नदी में मिलती थी। ज्यादा बरसात होने पर नदी की धारा फिर से फूटती है। खेतों में बनाए बांधों के कारण धारा पहले की तरह दिखाई नहीं देती। इसलिए अब आगौर का ही पानी नाडे में आता है।

इस तालाब से दुर्गापुरा के अलावा आठ-दस गाँव के लोग टेंकर से पानी ले जाते हैं। उनसे टेंकर भराई के पैसे नहीं लिए जाते। गाँव वालों का मानना है कि पानी प्रकृति की देन है, किसी को मना नहीं करना चाहिए। इस नाडे की प्रबंधन व्यवस्था दुर्गापुरा के लोगों के हाथों में है। तालाब की निर्मलता बनाए रखने के लिए आगौर क्षेत्र में शौच एवं गंदगी करने, भराव क्षेत्र में स्नान, हाथ, पैर, मुँह धोने, ट्रेक्टर का टायर पानी से दूर रखने, पशुओं को भराव क्षेत्र के पास बिठाने की मनाही है। गाँव के सभी लोग नियमों का पालन करते व कराते हैं।

जब लोगों के साथ मिलकर जल स्रोतों में एकत्रित पानी के मूल्य पर मंथन किया गया तो सभी अचंभित हुए। लोगों से पूछा गया कि जल स्रोत में पानी नहीं होता और आपको टेंकर द्वारा बाहर से पानी मंगवाना पड़ता, तो कितनी राशि खर्च होती। एक अनुमान के अनुसार जल स्रोतों से दस हजार पशु प्रतिदिन पानी पीते हैं। प्रति पशु न्यूनतम पाँच लीटर औसत पानी की जरूरत मानी जाए तो पचास हजार लीटर पानी प्रतिदिन चाहिए। गाँव में कम से कम बीस टेंकर प्रतिदिन बाहर से मँगवाने पड़ते और इस हिसाब से महीने में छ: सौ टेंकर की आवश्यकता होती। इस प्रकार वर्ष भर में बहत्तर सौ टेंकर पानी गाँव के बाहर से खरीदना पड़ता। प्रति टेंकर पाँच सौ रुपए की दर से छतीस लाख रुपए का पानी बाहर से मंगवाना पड़ता। गाँव में दो सौ परिवार हैं तथा प्रति परिवार पेयजल के दो टेंकर प्रतिमाह के हिसाब से वर्ष भर में अड़तालीस सौ टेंकर पानी बाहर से मंगवाना पड़ता और लगभग चौबीस लाख रुपए खर्च करने पड़ते। इस तरह कुल मिलाकर साठ लाख रुपए की लागत का पानी प्रतिवर्ष दुर्गापुरा के जल स्रोतों में एकत्रित होता है। ऐसा हिसाब कभी लगाया नहीं। गाँव के जल स्रोत में पानी है, तो पशुओं के लिए टेंकर से खरीदना नहीं पड़ता। पेयजल के लिए गाँव के लोग टेंकर द्वारा पानी मंगवाते हैं, तो यह खर्च आधा से ज्यादा कम हो जाता है।

गाँव के लोग साल में दो बार आगौर व तालाब की सफाई करते हैं। गोबर, मींगणी, कचरा बुहारते हैं। अनुपयोगी घास व झाड़ियां काटते हैं। यह काम पीढ़ियों से श्रमदान

समुदाय के सहयोग से छोटे नाडे से तालाब बना दुर्गापुरा का भँवरला नाडा

के माध्यम से होता आया है। पहले प्रत्येक घर से एक व्यक्ति का आना अनिवार्य था, अब स्वैच्छा पर है। तालाब की देखभाल में योगदान की भावना पहले की तुलना में कम हुई है। लेकिन फिर भी बहुत से लोग आते हैं। आगौर से सटे खेतों वाले धीरे-धीरे आगौर में कब्जा करने लगे हैं। गाँव के लोग पंचायत से सीमाज्ञान व अतिक्रमण हटाने की मांग करते हैं, परंतु कार्यवाही नहीं होती है। गाँव के लोगों के अनुसार तालाब अपनी भराव क्षमता, पाल, आगौर को लेकर बेहद मजबूत है, लेकिन समाज कमजोर हुआ है।

दुर्गापुरा में समुदाय और पंचायत मिलकर करते हैं जल स्रोतों का विकास व प्रबंधन

तालाब का जीर्णोद्धार किया, प्रबंधन व्यवस्था मजबूत की, फ्लोराइडयुक्त पानी से मुक्ति मिली

शिवसागर तालाब

तालाब जीर्णोद्धार व मजबूत प्रबंधन व्यवस्था से जल स्वावलंबी बना चावली

चावली का शिवसागर तालाब पाँच सौ परिवार और दस-बारह हजार पशुओं की पूरे साल प्यास बुझाता है। संवाद के दौरान लोगों ने बताया कि बीच का एक समय ऐसा आया, तालाब के किनारे बने बेरे में विद्युत मोटर लगने के बाद तालाब की देखभाल छोड़ दी। तालाब मिट्टी से भर गया तथा पानी आगौर में फैला रहता था। आवागमन के रास्ते भी बंद हो जाते थे। बेरा तालाब के पानी से रिचार्ज होता था। तालाब की स्थिति खराब होने के कारण धीरे-धीरे बेरे में पानी कम पड़ने लगा। गाँव में पानी का संकट रहने लगा। नागौर में सामाजिक सरोकार से जुड़े कार्य करने वाली संस्था उरमूल खेजड़ी ने गाँव के साथ मिलकर इस बात पर चर्चा की। उरमूल खेजड़ी ने समुदाय को लामबंद करके तालाब के सतत विकास व प्रबंधन व्यवस्था को भागीदारी के साथ तय करने का काम किया। पूरा गाँव एकत्रित हुआ तथा कुछ निर्णय लिए गए। अकाल राहत के तहत तालाब की मिट्टी निकाली गई और तालाब के आकार का विस्तार किया गया। इस तालाब का भराव क्षेत्र बारह बीघा है वहीं आगौर सात सौ बीघा में फैला हुआ है।

गाँव के लोगों के अनुसार रेवंतराम जी पंच के नेतृत्व में रामनाथजी, भगारामजी, रामकरणजी ने तालाब जीर्णोद्धार का बीड़ा उठाया। खुदाई की गई, लोग तालाब की उपजाऊ मिट्टी अपने खेतों में ले गए। अकाल राहत कार्य के तहत मजदूरी मिली तथा गाँव का नाडा तालाब बन गया। तालाब का पानी टूट कर गाँव की तरफ नहीं आए, उसके लिए पक्की दीवार व घाट निर्मित किए गए। गाँव वाले वर्ष 2005 के बाद महात्मा गांधी नरेगा एवं जन सहयोग से तालाब से जुड़े विकास कार्यों को कराते हैं। गाँव वालों ने प्रबंधन व्यवस्था को आज भी मजबूत बनाए रखा है। जो गाँव पानी की समस्या से जूझ रहा था, आज वो इस मामले में आत्मनिर्भर हो गया है।

जीर्णोद्धार के साथ भविष्य में तालाब उपयोगी बना रहे, इसके लिए गाँव के लोगों ने मिलकर विकास एवं प्रबंधन की टिकाऊ व्यवस्था बनाई। आगौर में गंदगी करने, अतिक्रमण करने, मिट्टी खोदकर पानी आवक अवरुद्ध करने की सख्त मनाही है। टेंकर व ऊंटगाड़ा के टायर पानी के अंदर डालने की मनाही है। स्नान करना, कपड़े धोना भी मना है। पानी कम पड़ने लगता है तो दूसरे गाँवों के लिए टेंकरबंदी लागू कर दी जाती है। वे मटकों, ऊँट गाड़े से पानी ले जा सकते हैं, टेंकर से नहीं। लोग दीपावली पर अनुमान लगाते हैं कि अगली बारिश होने तक पानी रहेगा या नहीं। गाँव का एक परिवार महीने में केवल तीन टेंकर ले जा सकता है। सामाजिक कार्यक्रमों में तालाब प्रबंधन समिति की अनुमति से लोग अतिरिक्त पानी भी ले सकते हैं। जब पानी और कम हो जाता है तो गाँव के भी टेंकर बंद कर दिए जाते हैं, केवल मटकों से पानी ले जाने की छूट होती है।

जल सहेली अन्नी देवी के अनुसार "पहले जब तालाब ठीक नहीं था, महिलाओं को पानी के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती थी। पुरुष कमाने के लिए बाहर जाते हैं तथा घर,

बच्चों व पशुओं को संभालने की जिम्मेदारी हम पर आ जाती है। दूर-दराज से पानी लाना पड़ता था। अब आराम हो गया। गाँव में पानी की उपलब्धता हो गई।" गाँव की महिलाएं तालाब की साफ-सफाई व प्रबंधन व्यवस्था में अहम योगदान देती हैं। वो अमावस्या, पूर्णिमा के दिन सफाई करती हैं। निर्जला ग्यारस को पूरा गाँव एकत्रित हो कर श्रमदान करता है।

तालाब का आगौर राजस्व रिकॉर्ड में गौचर के नाम से दर्ज है। इसे जल सहेली समूह की महिलाएं आगौर के रूप में रूपांतरित कराना चाहती हैं। वे चाहती हैं उनका तालाब उदाहरण बने, जिसे देखकर अन्य गाँवों के लोगों को भी जल स्रोतों के विकास एवं प्रबंधन की प्रेरणा मिले।

साल भर पानी की व्यवस्था के लिए सक्रिय है चावली के महिला-पुरुष

सुंडसागर तालाब

जातिवर मुखियाओं की देखरेख समिति नियमों की पालना करवाती है

आज भी गाँव की प्यास बुझाता है गुगरयाली का सुंडसागर

जायल तहसील के प्रसिद्ध तालाबों की गिनती में आता है गुगरयाली का सुंडसागर तालाब। आबादी बढ़ने के साथ गाँव तालाब की पाल तक आ गया लेकिन पेयजल का स्थायी स्रोत होने के कारण तालाब के पानी की शुद्धता का पूरा ध्यान रखा गया। इस गाँव की पाँच सौ घरों की बस्ती में लगभग तीन हजार लोगों व दस हजार मवेशियों को पूरे साल पानी मिलता है। यहाँ पर अच्छा ताल था एवं बरसात के पानी को संजोने की संभावना थी। समुदाय भी जल संचय के महत्व को समझता था इसलिए सुंडसागर तैयार हुआ। सुंडसागर प्रारंभ में छोटा स्रोत था। जैसे-जैसे जनसंख्या व मवेशी बढ़े, गाँव के पूर्वज इस तालाब का आकार बढ़ाते गए। गाँव निवासी हजारी राम जी के अनुसार, “सुंडाराम जी एक महात्मा थे, जिनकी पहल से यह तालाब बना था, इसलिए इसका नाम सुंडसागर रखा गया।”

इसके रखरखाव पर भी पूरा ध्यान दिया, जिस कारण यह तालाब आज भी उपयोगी है। तालाब की प्रबंधन व्यवस्था को लेकर पूरा गाँव एक है। भू-जल खारा है इसलिए पेयजल का एक मात्र स्रोत यही तालाब है। गाँव के लोगों को सरकारी पेयजल सप्लाई की नियमितता एवं उपलब्धता पर भरोसा नहीं है। प्रति परिवार माह में लगभग चार टेंकर यानी पंद्रह से बीस हजार लीटर पानी की जरूरत पड़ती है। सरकारी सप्लाई से इतना पानी नहीं मिल पाता। यदि तालाब ठीक न होता तो पानी बाहर से मंगवाना पड़ता और ज्यादा राशि खर्च होती।

तालाब का तल काफी मजबूत है, इसलिए सालभर पानी रहता है। आगौर भी चिकनी मिट्टी वाला है। जितना पानी आगौर में गिरता है, तालाब में एकत्रित हो जाता है। अमावस्या, पूर्णिमा को श्रमदान से आगौर की सफाई व तालाब से मिट्टी निकालने का काम किया जाता है। इसके अलावा साल में एक बार मानसून से पहले श्रमदान का बड़ा आयोजन होता है। गाँव के अधिकांश परिवार श्रमदान में हिस्सा लेते हैं। जब पानी कम पड़ने लगता है, तब किसान अपने खेतों में उपजाऊ मिट्टी डालने के लिए यहाँ से ले जाते हैं। तालाब की देखरेख के लिए अनौपचारिक कमेटी बनी है। यह कमेटी तय करती है, कितनी मिट्टी कहाँ से उठानी है। केवल पानी के साथ बहकर आई मिट्टी निकाली जाती है जिससे तालाब की भराव क्षमता बनी रहती है। महात्मा गांधी नरेगा से भी मिट्टी निकालने का काम होता है।

गाँव में तालाब की प्रबंधन व्यवस्था आज भी बेहद मजबूत है। तालाब के संरक्षण के लिए जातिवार मुखियाओं को शामिल करते हुए देखरेख समिति बनाई गई है। प्रबंधन के नियम हैं, जिनकी पालना देखरेख समिति करवाती है। यदि कोई नियम तोड़ता है तो उसके लिए सामाजिक व आर्थिक दंड का प्रावधान है। आगौर के आस-पास पेशाब व शौच करने, कचरा डालने की मनाही है। दूसरे गाँव को टेंकर भरने की मनाही है। तालाब के किनारे एक नियमों का बोर्ड भी लगाया गया है।

गाँव वालों के अनुसार जब दूसरे गाँव के लोगों के लिए टेंकरबंदी का नियम लागू किया, तब काफी मुश्किल आई थी। दूसरे गाँव वाले जबरदस्ती टेंकर भर कर ले जाते थे। गाँव वालों ने पुलिस कार्यवाही का सहारा लिया। तब से इस नियम की पालना हो रही है। अब दूसरे गाँव के टेंकर वाले नहीं आते और यदि गाँव के टेंकर वाले दूसरे गाँव के लिए पानी ले जाते हैं, तो उन पर जुर्माना लगाया जाता है व टेंकर भरने पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है।

आगौर में यदि कोई पशु मर जाता है, तो उसे गाँव के लोग तुरंत बाहर डलवाते हैं। गाँव का गंदा पानी तालाब में नहीं आए, इसके लिए मिट्टी का बंधा बनाया हुआ है। गाँव में यदि कोई शादी या सामाजिक समारोह होता है, तो समिति बाहर से आने वाले लोगों को तालाब के नियमों के बारे में बताती है। तालाब गाँव की जरूरत है और आने वाले समय में भी जरूरत रहेगी। युवा पीढ़ी प्रबंधन व्यवस्था में सहयोग करती है। पंचायत भी जीर्णोद्धार का काम कराती है।

बीस गांवों की प्यास बुझाने वाला रामसर का राम सरोवर दो दशक से खाली नहीं हुआ

राम सरोवर

रामसर के युवाओं ने संभाली तालाब और पर्यावरण की प्रबंधन व्यवस्था

रामसर गाँव का राम सरोवर तालाब नागौर जिले के प्रसिद्ध तालाबों में से एक है। गाँव निवासी कन्हैया लाल जी बताते हैं कि यह तालाब तीन सौ पचास वर्ष पुराना है। इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि "यहाँ सांवलीदास जी महाराज रहते थे। उनको सपना आया कि यहाँ पर जमीन में लक्ष्मीनाथ जी महाराज की मूर्ति है। उन्होंने गाँव के लोगों से चर्चा की तथा उस जगह को खुदवाया तो चतुर्भुज मूर्ति निकली। जोधपुर महाराज जसवंत सिंह जी को पता चला, तब वो देखने आए तथा उन्होंने यह मूर्ति जोधपुर में स्थापित करना चाहा। चार बैलों वाला रथ आया तथा मूर्ति डाल कर ले जाने लगे। लेकिन खेजड़ी के पेड़ के पास आकर रथ रुक गया। इसे आज भी हम रथ वाली खेजड़ी कहते हैं। चार की जगह आठ बैल जोड़े फिर भी रथ आगे नहीं बढ़ पाया। तब कुछ जानकार लोगों ने कहा कि इस मूर्ति को यहीं स्थापित कर दो। मूर्ति स्थापित हुई तथा बाद में भव्य मंदिर बन गया।"

जब मूर्ति प्रकट हुई तब तक यहाँ गाँव नहीं बसा था। गाँव की जमीन भी नहीं थी। जागीरदारों ने तीन गाँवों की जमीन काट कर बारह सौ बीघा जमीन दी। जमीन कम थी। बारह सौ बीघा में छ: सौ बीघा का ताल था। शेष छ: सौ बीघा कृषि के लिए कम थी। तब यहाँ के किसानों को छ: किलोमीटर दुर अजपुरा में कृषि के लिए जमीन दी गई। गाँव बसा, तब भी यहाँ छोटा तालाब था। उस समय इसे काला नाडा के नाम से जानते थे। पानी का साधन नहीं था, इसलिए गाँव यहाँ बसा तथा खेती के लिए लोग छ: किलोमीटर दुर जाया करते थे। बाद में गाँव के पूर्वज इसका विस्तार करते गए तथा तालाब बन गया। पाल पर मंदिर, घाट बने। चारों तरफ खेजड़ी के वृक्ष लगाए। तालाब को सुंदर रूप दिया। तालाब के चारो तरफ हरियाली है और कई प्रकार के पक्षी भी वास करते हैं। जो इस तालाब की सुंदरता को और बढ़ाते हैं।

गाँव वाले तालाब की विशेषता बताते हैं कि यहाँ सालों साल पानी पड़ा रहे, लेकिन इसमें जीव नहीं पड़ते। कुछ लोग इसे चमत्कार मानते हैं, तो कुछ लोग इसे मिट्टी की करामात। तालाब का तल बहुत मजबूत है। नीचे कंकरीट है तथा उस पर पानी के बहाव से चिकनी मिट्टी की परत आई हुई है। आवक भी अच्छी है। छ: सौ बीघा जमीन पर बरसे पानी की एक-एक बूंद तालाब में आती है। बीस गाँवों के लोग इस तालाब से पानी लेकर जाते हैं। यह तालाब बीस वर्षों में कभी खाली नहीं हुआ। इसे तीन वर्ष पहले तल की मिट्टी निकालने के लिए टेंकरों से खाली कराया था। लगभग बारह फुट मिट्टी जमा हो गई थी। तालाब की देखरेख करने वाली समिति ने ऐलान किया कि जिस किसान को मिट्टी चाहिए, अपने खेत के लिए ले जाए। सैकड़ों ट्रेक्टर व जेसीबी लगी। एक पैसा खर्च नहीं हुआ, पूरी मिट्टी निकाल ली गई।

जितना मजबूत तालाब, उतनी ही मजबूत प्रबंधन व्यवस्था। दूसरे गाँवों के लोगों को एक सीमा तक पानी

जल सहेलियों के साथ युवा वर्ग को अपने तालाब पर गर्व है, प्रबंधन में करते हैं सहयोग

ले जाने की छूट है। दीवार पर निशान बनाया हुआ है। पानी के उस निशान तक आने के बाद दूसरे गाँव वालों को टेंकर से पानी ले जाने की मनाही है। इसके बाद ऊंटगाड़े की टंकी से ले जाने की छूट रहती है। प्रारंभ में इस नियम की अनुपालना में मुश्किल आई। लेकिन गाँव वालों ने हार नहीं मानी। उन्होंने जिला कलक्टर से मिलकर लिखित में यह आदेश निकलवाया तथा दो-तीन बार पुलिस कार्यवाही की, उसके बाद से नियंत्रण हो गया।

आगौर के आस-पास हजारों की संख्या में जीव-जंतु हैं। उनके लिए पानी बचाना जरूरी है, इसके लिए सख्त नियम बनाए गए हैं। टेंकर या गाड़े का टायर पानी के अंदर डालना मना है। आगौर में गंदगी करना, तालाब में स्नान करना व कपड़े धोना मना है। समुदाय तालाब के पानी को पवित्र मानता है, इसलिए गाँव का कोई व्यक्ति नियम नहीं तोड़ता। नियम तोड़ने वाले को पहले गाँव वाले समझाते हैं, यदि वो नहीं मानता तो पुलिस कार्यवाही करते हैं। समुदाय ने तालाब की पहरेदारी के लिए व्यक्ति रखा हुआ है जिसे जन सहयोग से मजदूरी देते हैं।

पुराने समय में लोग अमावस्या, पूर्णिमा को तालाब के आस-पास सफाई करते थे। अब गाँव के लोग हर महीने में चार बार सफाई करते हैं। बीच में कुछ शिथिलता आई, लेकिन अब गाँव के युवाओं ने बागडोर संभाल रखी है। गाँव में पर्यावरण प्रेमी युवाओं का एक समूह है जोकि इस तालाब की देखरेख करता है। हाल ही में इस युवा समूह ने जन सहयोग से तालाब के चारों तरफ तीन सौ पौधे लगाए हैं तथा देखभाल करते हैं। युवाओं का व्हाट्सएप ग्रुप है। तालाब से जुड़ा कोई भी कार्य करना होता है, तो एक संदेश से ही गाँव के युवा तत्परता के साथ इकट्ठा हो जाते हैं।

गुसाई धाम सरोवर

छः गांवों की समिति मिलकर करती है जुंझाला गुसाई धाम सरोवर की प्रबंधन व्यवस्था

छः गाँवों के लोग मिलकर करते हैं गुसाई सरोवर का प्रबंधन

जुंझाला के गुसाई जी धाम सरोवर में स्नान करने की छूट है। आस्थावान लोग दुर-दुर से आते हैं तथा गुसाई जी महाराज के दर्शन कर तालाब स्नान से आराधना पूरी करते हैं। यही पानी गाँव के लोग पीते हैं। लोगों का मानना है कि एक बार हमने स्नान करने से रोका था, पानी गंदा हो गया था। यह गुसाई महाराज का चमत्कार है। इस गाँव के लोग किसी को स्नान करने से नहीं रोकते हैं, पर इस बात का भी विशेष ध्यान रखते हैं कि कोई साबुन लगाकर स्नान न करे और कपड़े न धोये। यहाँ के लोग इस सरोवर को पवित्र मानते हैं। धार्मिक आस्था के साथ-साथ तालाब की प्रबंधन व्यवस्था भी निराली है। छः गाँव पेयजल के लिए तालाब के पानी पर निर्भर हैं तथा प्रबंधन संबंधी निर्णय भी छः गाँव के लोगों को शामिल कर बनाई गई कमेटी करती है। तालाब की देखभाल गुसाई जी को मानने वाले समुदाय के अतिरिक्त जल सहेली भी करने लगी हैं। चारों तरफ चूना-पत्थरों के खनन के बावजूद तालाब व आगौर को सुरक्षित रखा गया है। आगौर की तारबंदी की गई है, ताकि अतिक्रमण न हो सके।

तालाब पर घाट, गाँव की तरफ पाल पर तारबंदी, पैदल पथ आदि बनाकर सुंदर व आकर्षक बनाया गया है। लोगों के बताए अनुसार, यह तालाब किसी बंजारा समुदाय द्वारा बनाया गया था। टेंकर व यात्रियों के आने-जाने के लिए गेट बने हैं। पाल के ऊपर से कोई नहीं आ सकता। गाँव निवासी सीताराम जी व झूमरराम जी ने बताया कि "तालाब का भराव क्षेत्र बड़ा है, तथा गहराई भी ज्यादा होने से एक बार भरने के बाद वर्षभर पानी रहता है। आगौर व भराव क्षेत्र सहित 900 बीघा भूमि है।"

तालाब की देखभाल के लिए बीस लोगों की समिति है। पानी उपयोग के लिए हर परिवार साल के 300 रुपए जमा कराता है तथा उसे प्रतिमाह एक टेंकर पानी ले जाने की अनुमति रहती है। तालाब की देखभाल के लिए एक व्यक्ति रखा है। वह इसका हिसाब-किताब रखता है। संत जसानाथ जी आगौर के प्रहरी हैं। उन्होंने अपना पूरा जीवन तालाब व आगौर को हरा-भरा बनाने के लिए समर्पित किया है। गाँव के लोग भी उनके वृक्ष लगाने की मुहिम में मदद करते हैं। पानी के टेंकर भिजवाते हैं तथा श्रमदान से वृक्षों के थाँवले बनाने व पानी पिलाने का काम करते हैं।

जल सहेली हीरो देवी, रसाल देवी, तिजो देवी, सरजू देवी व रामी देवी ने बताया कि "आगौर समतल व साफ-सुथरा है जिससे एक बरसात में तालाब भर जाता है। पानी को सोच समझकर काम में लेते हैं, ताकि पूरे साल पानी मिलता रहे। अन्य छः गाँव के लोगों को दीपावली तक टेंकर से पानी ले जाने की छूट है। उसके बाद टेंकर बंदी लागू हो जाती है। यदि गाँव की सीमा में बने होटल वाले टेंकर से पानी ले जाते हैं, तो प्रति टेंकर पाँच सौ रुपए लिए जाते हैं। मंदिर, स्कूल, धर्मशाला व सार्वजनिक प्याऊ के उपयोग के लिए टेंकर ले जाने पर कोई शुल्क नहीं लिया जाता। तालाब से जुड़े आय-व्यय का ब्यौरा तालाब की देखभाल के लिए रखे गए व्यक्ति के पास रहता है। दीपावली को प्रबंधन समिति द्वारा आय-व्यय का ब्यौरा सबके सामने रखा जाता है।"

आगौर क्षेत्र में पेड़ काटने पर इक्कीस सौ रुपए का दंड वसूला जाता है। संत जसानाथ जी ने आगौर में सैकड़ों पौधे लगाए हैं। उनकी प्रेरणा से गाँव के लोग भी वृक्षों की देखभाल करते हैं। याली आते हैं, स्नान करने की मनाही नहीं है, लेकिन जूता-चप्पल घाट के बाहर खोलना होता है। तालाब की दीवारों पर यह नियम लिखे हुए हैं तथा चौकीदार भी ध्यान रखता है। चैत्र मास में गुसाई जी महाराज का मेला लगता है, जिसमें हजारों याली आते हैं। उस दौरान गाँव के लोगों की व्यवस्था समिति बनाई जाती है।

बारह सौ वर्ष पुराना है मुंडियाड़ ब्राम्हणी माता तालाब। पाल, घाट, मंदिर व छतरियां तालाब को सुंदर बनाए हुए हैं

ब्राम्हाणी माता तालाब

मुंदियाड ब्राम्हाणी माता के तालाब का पानी पीने से ही मन में संतुष्टि होती है

मुंदियाड़ गाँव से सटा हुआ है ब्राम्हाणी माता का तालाब। इसे मुंदल माता का तालाब भी कहते हैं। तालाब की पाल को मजबूत पत्थर की दीवारों से बांधा गया है। सुंदर घाट बने हैं। तालाब किनारे ब्राम्हाणी माता का मंदिर है। गणेश जी का भव्य मंदिर निर्माणाधीन है। पुराने समय से तालाब के किनारे पत्थरों की बड़ी छतरियां भी बनी हैं। इन सबको मिलाकर तालाब का सौंदर्य बेहद आकर्षक है। गाँव के लोग इस तालाब के पानी को पवित्र एवं शुद्ध मानते हैं। गाँव निवासी भैराराम जी खोजा बताते हैं कि “घरों में पाईप लाइन से सप्लाई का पानी आता है। उसका पीने में उपयोग नहीं करते। तालाब का पानी पीने से ही संतुष्टि होती है। तालाब का पानी हमारे दिमाग को ठंडा रखता है।”

गाँव के बुजुर्ग मूलाराम जी खोजा, जिन्होंने जन सहयोग जुटाकर पाल व घाट निर्माण का कार्य कराया था, से बात करने पर पता चला कि बारह सौ वर्ष पूर्व भीमाराम जी चौधरी के नेतृत्व में गाँव वालों के सहयोग से इस तालाब का निर्माण हुआ था। उस समय पीने के पानी का बहुत संकट था। आज की तरह सरकार व्यवस्था नहीं करती थी। भू-जल अधिक गहरा व खारा था। घरों में टाँके भी नहीं थे। गाँव बसाने से पहले पानी का प्रबंध करना पड़ता था। गाँव के पुराने लोग पानी बहाव वाला पक्का तल देखते थे। पानी बहाव कहाँ जाता है और कहाँ रोककर संग्रहण की संभावना है, स्थान चयन कर तालाब बनाते थे। खुदाई से निकली मिट्टी से पाल बनाते थे। यहाँ तालाब बन जाने के बाद ही गाँव की बसावट हुई। जमीन के पानी का खारापन आज भी वैसा ही बना हुआ है, लेकिन प्यास बुझाने के लिए आज तालाब का मीठा पानी है।

इस तालाब का भराव क्षेत्र नौ हैक्टेयर तथा आगौर लगभग चौरासी हैक्टेयर है। प्रबंधन व्यवस्था अच्छी है। यहाँ दस लोगों की कमेटी है। साल में एक बार आगौर की सूखी लकड़ियों व खाद की निलामी की जाती है। उससे जो पैसा आता है, उसे ब्याज पर देते हैं। इससे जो भी आय होती है वो तालाब से जुड़े विकास कार्यों में खर्च की जाती है। कमेटी अब तक विलायती बबूल की झाड़ियां कटवाने में पैसा खर्च करती आई है। जब मिट्टी निकालने की जरूरत होती है, तब किसान मिट्टी को खेतों में ले जाते हैं। महात्मा गांधी नरेगा से भी साफ-सफाई व मिट्टी निकालने का काम कराया जाता है। होली, दीपावली व रामाश्यामा के दिन समुदाय के सामने आय-व्यय का ब्यौरा दिया जाता है। तालाब के रखरखाव के लिए श्रमदान की परंपरा बीच में बंद हो गई थी, लेकिन यहाँ बने जल सहेली समूह ने प्रथा को फिर से चालू कराया।

तालाब से कुछ परिवार सिरघड़ा व कुछ टेंकर से पानी ले जाते हैं। पानी केवल गाँव के लोग ही उपयोग करते हैं। जब पानी कम होता दिखता है, तब टेंकर बंद कर देते हैं। सिरघड़ा पानी ले जाने की छूट देते हैं। तालाब में स्नान करने, कचरा डालने व आगौर में गंदगी करने की सख्त पाबंदी है। तालाब में भैंस को पानी पिला सकते हैं, लेकिन पानी के अंदर जाने पर रोक है। साफ-सफाई व शुद्धता के नियम गाँव के ज्यादातर लोग मानते हैं। नियम तोड़ने वालों को एक बार समझा कर माफ कर देते हैं, दुबारा नियम तोड़ने पर ग्यारह सौ रुपए का जुर्माना लगाते हैं। सामाजिक व राजनैतिक तौर पर भले ही अलग-अलग मत हों, लेकिन तालाब को लेकर पूरा गाँव एकमत है।

तालाब के पाल पर बनी छतरियों व स्तंभों पर बनी आकृतियां प्राचीनता की साक्षी व आकर्षण का केंद्र हैं

रोल तालाब

नागौर के प्रसिद्ध तालाबों में से एक है, रोल शरीफ का तालाब। पनघट व पनिहारियों की चहल-पहल देखते बनती है रोल तालाब पर

रोल तालाब के कारण बच्चों के रिश्ते आसानी से होते हैं

रोल शरीफ बड़ा कस्बा है। रियासत काल में यहाँ की जागीरी मुस्लिम समुदाय के पास थी। दो विशेषताओं के लिए यह कस्बा प्रसिद्ध है। एक, रोल का जीवंत तालाब, दूसरा यहाँ के निवासियों का सांप्रदायिक सौहार्द व प्रेम। सभी जाति और समुदाय के लोग रहते हैं गाँव में। मटका भरने के लिए अलग-अलग घाट बने हैं, सुविधा अनुसार कोई किसी भी घाट से पानी भर सकता है। प्रत्येक घर के पलिंडे में पीने का पानी तालाब से जाता है। तालाब पर सुबह-शाम पनिहारियों का मेला लगता है। आधा से एक किलोमीटर दूर से पानी का मटका लाना एक काम है, लेकिन आवागमन एवं घाट पर बतियाने का अवसर भी है। संध्या के समय तालाब पर रौनक रहती है। पनिहारियों की चहल-पहल के साथ जलीय जीवों, पक्षियों की आवाजें तालाब को जीवंत बनाती हैं। गाँव के लोगों का कहना है कि मीठे पानी का प्रबंधन होने के कारण हमारे बच्चों के रिश्ते आसानी से हो जाते हैं। गाँव में बेटी देते हैं। कहते हैं, लड़की को पानी का संकट नहीं देखना पड़ेगा।

पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्रवण कुमार जी मेघवाल ने बताया कि तालाब का निर्माण बंजारा समुदाय ने कराया था। कालांतर में उनका बैलों से व्यापारिक परिवहन किया जाता था। बंजारे हजारों की संख्या में बैल लेकर चलते थे। देश के एक कोने से दूसरे कोने तक आवागमन होता था। रास्तों में जहाँ पड़ाव डालते, पानी की जरूरत पड़ती थी। रेगिस्तान में उन्होंने तालाब व बावड़ियां बनाई। रोल शरीफ का तालाब भी उनमें से एक है। लोक मान्यता के अनुसार बंजारों ने डेरा डाला, परंतु पानी नहीं था। वो यहाँ के पीर के पास गए। पीर ने उनको कांसे का कटोरा दिया। बंजारे ने कटोरे से मिट्टी खोदी तो, धरती से पानी निकल आया। तब बंजारे ने तालाब बनवा दिया। गाँव के लिए भी पीने के पानी का स्रोत वर्षा जल संग्रहण ही था। भूजल अत्यधिक खारा था। गाँव के लोगों ने तालाब के सारसंभाल एवं विकास का जिम्मा उठाया। तालाब का विस्तार किया और पाल-घाट, घाट पर मंदिरों, दरगाहों का निर्माण कराकर सुंदर बनाया। वर्तमान पीढ़ी भी पूर्वजों की चलाई गई विकास और प्रबंधन की रीत को आगे बढ़ा रही हैं। तालाब का तल मजबूत है। लाल रंग की मिट्टी सीमेंट से मजबूत है। इस कारण साल भर पानी रुका रहता है।

तालाब की गहराई चौबीस फुट व भराव क्षेत्र बीस बीघा है। पाँच सौ बीघा आगौर है। एक अच्छी बरसात होने पर तालाब पूरा भर जाता है और पानी पूरे साल चलता है। तालाब से टेंकर भरना प्रतिबंधित है। सिर घड़ा या ऊंटगाड़ा टंकी से पानी ले जा सकते हैं। इसी कारण से तालाब कभी पूरा खाली नहीं होता। तालाब में कछुए, मछलियां तथा बहुत से जलीय जीवों का बसेरा है। तालाब को कभी खाली नहीं होने दिया जाता क्योंकि यदि तालाब खाली हो गया, तो सभी जीव-जंतु मर जाएंगे। आगौर व भराव क्षेत्र में गंदगी करना मना है। यदि गाँव में कोई बारात आती है, तो उनको तालाब प्रबंधन के नियमों से अवगत कराया जाता है। पहले दाह संस्कार के बाद लोग स्नान करते थे, अब केवल हाथ धोते हैं। अमावस्या के दिन तालाब की सफाई करते हैं।

पिछली तीन पीढ़ियों में तालाब पूरा खाली नहीं हुआ है। तालाब की मिट्टी निकालने के लिए पानी को एक तरफ मोड़ा जाता है। मिट्टी खेत वाले ले जाते हैं तथा बिना खर्च के काम हो जाता है। तालाब के प्रबंधन के लिए गाँव के मुखिया लोगों की कमेटी है। कमेटी द्वारा प्रबंधन के नियम बनाकर ग्राम पंचायत से अनुमोदित कराए गए हैं। समिति व ग्राम पंचायत मिलकर प्रबंधन व्यवस्था देखती है। तालाब व आगौर राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज हैं तथा सीमा का ज्ञान भी है। पंचायत द्वारा आगौर के चारों तरफ खाई करवाई गई है, जिससे अतिक्रमण नहीं हो। निगरानी के लिए एक व्यक्ति रखा है। तालाब किनारे हनुमान जी, महादेव जी का मंदिर है, तो मूरा शहीद बाबा की मजार और पीर पहाड़ी है। अमिसुद्दीन बताते हैं कि “कई मेले व ऊर्स होते हैं, तब तालाब की स्वच्छता को बनाए रखने के लिए निगरानी समिति बनाते हैं। तालाब का पानी इतना पवित्र है, इसे पीने से बीमारी दूर हो जाती है।”

घर-घर पेयजल के लिए नल की सुविधा है, लेकिन लोग पीने के लिए तालाब का पानी उपयोग करते हैं

तालाब की प्रबंधन व्यवस्था को लेकर सभी समुदाय एक मत हैं। कस्बे के समीप होने के बावजूद तालाब की शुद्धता बनाए हुए हैं रोल गांव के लोग

मोरप्पा नाडी

नाडी की सफाई करते हैं, बरसात हो जाती है

बरसात क्षेत्र के जीवन का आधार है। पालड़ी जोधा गाँव मोरप्पा माता मंदिर के पुजारी और लोगों की मान्यता के अनुसार यदि बरसात समय पर नहीं होती है, तो मोरप्पा नाडी को बुहारते हैं और दूसरे दिन बरसात हो जाती है। पालड़ी जोधा बड़ा गाँव है तथा गाँव में और भी जल स्रोत हैं। लेकिन पेयजल के रूप में मुख्य मोरप्पा नाडी है। गाँव के निवासी हेमाराम जी ने बताया कि यह तालाब मोरप्पा माता मंदिर में आने वाले चढ़ावे की राशि से बनाया गया था। मंदिर की दूर-दूर तक मान्यता है तथा हजारों की संख्या में भक्तजन आते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह मंदिर पचीस सौ वर्ष पूर्व चंद्रगुप्त मौर्य के काल का है। वर्तमान पुजारी की यह पाँचवी पीढ़ी है, जो मंदिर की पूजा के साथ-साथ तालाब की देखभाल करते हैं। इसके अतिरिक्त प्रबंधन के लिए बीस लोगों की समिति है, जो समय-समय पर जरूरत के अनुसार निर्णय लेती है, तालाब व आगौर के संरक्षण, सुरक्षा, विकास एवं प्रबंधन के कार्य करती है। तालाब के पास ही छः हजार बीघा माता जी की ओरण है जिसका पानी नाडी में आता है। ओरण में वृक्ष काटना मना है।

जन सहयोग तथा स्वयंसेवी संस्था के सहयोग से तेरह वर्ष पूर्व नाडी की खुदाई कर गहरा करने के साथ पाल व घाट का निर्माण कराया गया था। इससे पहले नाडी की मिट्टी निकालने के लिए एक परिवार को एक चौकड़ी नाप कर देते थे और मिट्टी निकालने का काम किया जाता था। इस तरह समुदाय तालाब के विकास कार्यों में अपना योगदान देता था। वयोवृद्ध हेमाराम जी का कहना है, "नाडी का पानी निर्मल है, गंगाजल की तरह पवित्र है। गाँव में नहर के पानी की सप्लाई आती है। उस पानी को नहाने, कपड़े धोने व पशुओं को पिलाने के काम में लेते हैं। नाडी गाँव से दूर है। लोग मोटर साइकिलों पर जैरीकन, कैंपर व कैन भर कर ले जाते हैं। पीने के लिए मोरप्पा नाडी का पानी उपयोग करते हैं।"

नाडी से टेंकर केवल गाँव के लोग ले जा सकते हैं। तालाब के अंदर स्नान करना, हाथ-मुँह धोना, टेंकर का टायर पानी में डालना एवं मटका भरने के दौरान जूता, चप्पल पहन कर पानी में जाना मना है। आगौर क्षेत्र में मिट्टी की खुदाई करना मना है। श्रद्धालुओं के पूजा की सामग्री का अलग स्थान बना हुआ है ताकि वह तालाब में नहीं आए। गाँव के निवासी भवंरलाल खोजा ने बताया कि ग्राम पंचायत भी तालाब के विकास एवं प्रबंधन में सहयोग करती है। आगौर में पशु मरते हैं, तो पंचायत द्वारा आगौर से बाहर डलवाया जाता है। गत वर्ष पानी की आवक बढ़ाने के लिए दो पक्के चैनल बनाए गए हैं। प्रबंधन समिति काम बताती है, उस कार्य को पूर्ण कराने में पंचायत अपना पूरा सहयोग देती है।

यह नाडी भी आगौर क्षेत्र में अतिक्रमण की समस्या से ग्रसित है। नाडी के आगौर व ओरण पर कुछ लोगों ने कब्जे कर रखे हैं, पंचायत उनका सीमा ज्ञान करवा कर हटाने की कार्यवाही करने का आश्वासन भी दे चुकी है। नाडी के किनारे विलायती बबूल काफी मात्रा में उगे हुए हैं जिन्हें पंचायत कटवाने की तैयारी में है। धीरे-धीरे ओरण व आगौर में पेड़ों की संख्या कम हो रही है, जिसको लेकर पंचायत और समुदाय दोनों चिंतित हैं, इसके लिए वृक्षारोपण का काम कराने की आवश्यकता है।

समुदाय व पंचायत मिलकर करते हैं विकास एवं प्रबंधन का कार्य,

20 सदस्यों की प्रबंधन समिति है।

मोरप्पा नाडी गांव से दूर है। पहले सिर घड़ा पानी ले जाते थे, अब मोटर, साइकिल से जरीकन, कैंपर भर कर ले जाते हैं

गोटण नाडी

महिला द्वारा कराया गया नाडी का निर्माण

बहुत ऐसे तालाब हैं, जिनका निर्माण महिलाओं द्वारा कराया गया। नराधना की गोटण नाडी का निर्माण गोटी नामक महिला ने 800 वर्ष पूर्व कराया था। गाँव के अनुभवी हरिराम जी नरादणिया के अनुसार यह नाडी साठ वर्षों में तीन बार खाली हुई है। इसका भराव क्षेत्र छ: हेक्टेयर, गहराई 50 फुट व आगौर 500 बीघा है। 20 साल पूर्व जब खाली हुई तब मिट्टी निकालने का काम किया गया था। मिट्टी गाँव के किसान ट्रेक्टर ट्रोलियों से भर कर अपने खेतों में ले गए जिससे पैदावार अच्छी हो सके। गाँव की परंपरा है कि नाडी के उपयोगकर्ता श्रमदान जरूर करेंगे। जो परिवार श्रमदान करने में असमर्थ होते हैं, उनसे एक श्रमिक की मजदूरी ली जाती है। श्रमदान में तालाब व आगौर की साफ-सफाई व जितना खाली हुआ है उस किनारे से मिट्टी निकालने का काम किया जाता है। खेताराम जी, जोगीराम जी, मेहराम जी व बजरंग जी ने बताया "नाडी की देखभाल के लिए गाँव सभा का गठन किया हुआ है तथा समय-समय पर बैठकें करते हैं, नाडी के विकास एवं प्रबंधन पर चर्चा करते हैं।"

नाडी की मिट्टी निकालने, ग्राम पंचायत से कार्य कराने एवं श्रमदान के लिए सभा निर्णय लेती है तथा गाँव वालों को अवगत कराती है। जलझूलनी ग्यारस के दिन गाँवई जागरण होता है तथा दूसरे दिन श्रमदान कर गाँव के लोग आगौर की सफाई करते हैं। झाड़ियां काटते हैं। सूखी लकड़ियां व गोबर खाद एकत्रित करते हैं तथा नीलामी करते हैं। नीलामी से मिली राशि नाडी के विकास व गाँव के हित में खर्च होती है। होली के दूसरे दिन प्रबंधन समिति द्वारा गाँव सभा बुलाई जाती है जिसमें हिसाब प्रस्तुत करते हैं तथा नाडी के विकास एवं प्रबंधन संबंधी विषयों पर चर्चा कर निर्णय करते हैं।

ग्राम पंचायत से 2008 में नाडी खुदाई व चारों तरफ दीवार व घाट-सीढ़ियां बनाने का कार्य किया गया। नराधना व जुंझाला के बीच पानी आवक के रास्ते में पुल का निर्माण कराया गया, जिससे पानी की आवक नहीं रुकती। नाडी उपयोग के लिए गाँव सभा द्वारा नियम बनाए गए हैं। नाडी भराव क्षेत्र में स्नान करना, कपड़े धोना, पशुओं को नहलाना तथा टेंकर से पानी ले जाना मना है। आगौर की तरफ शौच जाना प्रतिबंधित है।

मटका भरने के दौरान जूता-चप्पल पानी से दूर खोलना पड़ता है। नियम तोड़ने वालों पर समुदाय द्वारा जुर्माना व दंड तय किया जाता है। आगौर के चारों तरफ खाई लगाकर निशान किया गया है, ताकि कोई अतिक्रमण नहीं कर सके। गाँव में पेयजल का पुख्ता व भरोसेमंद जल स्रोत है इसलिए इसकी देखभाल करते हैं। भविष्य में भी पानी की जरूरत नाडी से पूरी हो सकेगी।

आठ सौ वर्ष पूर्व गोटी नामक महिला ने बनवाई थी नराधना की गोटण नाडी, आज भी गांव के पेयजल का मुख्य स्रोत है

समुदाय और पंचायत के सामंजस्य से आज भी संरक्षित है गोटण नाडी